इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
जेंडर एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ

बी.जी.एस.ई.–001
जेंडर संवेदीकरण : समाज, संस्कृति और परिवर्तन

खण्ड

1
जेंडर की अवधारणा का निर्माण

इकाई 1
जेंडर सम्बन्धी अवधारणाओं को समझना 5

इकाई 2
जेंडर और लैंगिकताएँ (सेक्सुअलिटीज) 17

इकाई 3
पुरुषत्व 30

इकाई 4
दैनिक जीवन में जेंडर 43

विशेषज्ञ समिति : कोर्स डिजाइन एवं कोर्स प्लानिंग

बाहरी सदस्य

प्रो. संजय श्रीवास्तव
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. रजनी मेनन
ट्रेनर/रिसर्चर, नई दिल्ली

श्रीमती हुमा मसूद
UNESCO, नई दिल्ली

इग्नू फेकल्टी

प्रो. देबल सिंहारॉय
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. बाबू पी. रमेश
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. शुभांगी वैद्य
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. हिना के. बिजली
इग्नू, नई दिल्ली

एसओजीडीएस फेकल्टी

प्रो. अनु अनेजा
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. अनु जे. थॉमस
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. सविता सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. नीलिमा श्रीवास्तव
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. हिमादरी रॉय
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. स्मिता एम. पाटिल
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सुनीता धल
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. जी. उमा
इग्नू, नई दिल्ली

खण्ड निर्माण दल

इकाई सं.	इकाई लेखक	इकाई परिवर्तन
1	जी. उमा	नीलिमा श्रीवास्तव
2	ऋतुपर्णा बोहरा	नीलिमा श्रीवास्तव
3	नीलिमा श्रीवास्तव	जी. उमा
4	सुनीता धल	नीलिमा श्रीवास्तव

पाठ्यक्रम सम्पादक

प्रो. कृष्णा मेनन
स्कूल ऑफ ह्यूमनिटीज
अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली

डॉ. मीनाक्षी मल्होत्रा
असोसिएट प्रोफेसर, हंस राज कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नीलिमा श्रीवास्तव
एसओजीडीएस, इग्नू
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक

नीलिमा श्रीवास्तव
एसओजीडीएस, इग्नू

जी. उमा
एसओजीडीएस, इग्नू

खण्ड संपादक

डॉ. मीनाक्षी मल्होत्रा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आंतरिक संपादक

नीलिमा श्रीवास्तव
एसओजीडीएस, इग्नू

अनुवादक

श्री प्रांजलधर

खण्ड पुनरीक्षक

डॉ. आर. पी. पाण्डे
एस.ओ.टी.एस.टी., इग्नू

आंतरिक पुनरीक्षक

नीलिमा श्रीवास्व
एस.ओ.टी.एस.टी., इग्नू

Acknowledgements: Vice Chancellor, IGNOU, Director, SOGDS and Faculty and Staff of SOGDS for academic and administrative support

Disclaimer: Any materials and images adapted from web-based resources in this self-learning course material are being used for educational purposes only and not for commerical purposes.

सामाग्री निर्माण

श्री. एस. बर्मन
उप-कुल सचिव, एम.पी.डी.डी.,इग्नू

श्री. वाई.एन. शर्मा
सहायक कुल सचिव, एम.पी.डी.डी.,इग्नू

श्रीमती सुमथी नायर
अनुभाग अधिकारी, एम.पी.डी.डी,इग्नू

जुलाई, 2017

©इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2017

ISBN-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

शिक्षा विद्यापीठ एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से एम.पी.डी.डी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली
मुद्रक :

पाठ्यक्रम परिचय

'जेंडर संवेदीकरण : समाज, संस्कृति और परिवर्तन' विषय पर इस स्नातक पाठ्यक्रम का लक्ष्य समाज में जेंडर संबंधी मुद्दों की प्रचलित धारणाओं को स्पष्ट करना और इन्हें सम्बोधित करने के तरीकों पर विचार करना है। इसका लक्ष्य समानता और न्यायसंगतता जैसे मूल्यों को सम्बोधित करते हुए समाज में परिवर्तन लाने के लिए तरीके उपलब्ध कराना भी है। महिलाओं, पुरुषों और उनके मुद्दों की पड़ताल करने के लिए समाज, संस्कृति और राज्य ने कुछ मानकों, रिवाजों और प्रचलित धारणाओं (स्टीरियोटाइप्स) का निर्माण किया है। पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के कारण महिलाओं के साथ पुरुषों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता। अपने अधिकारों, आकांक्षाओं और क्षमताओं को हासिल करने के लिए महिलाओं को ज्यादा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिलाओं, पुरुषों और अन्य लैंगिकताओं के बारे में प्रचलित पितृसत्तात्मक धारणाओं को विखण्डित करना महत्वपूर्ण है। परिवार, समाज और राज्य भी पुरुषों और महिलाओं के लिए भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का निर्माण करते हैं और इन्हें सुदृढ़ बनाते हैं। महिलाओं को नियन्त्रित करने और उन पर प्रभुत्व स्थापित करने में महिलाओं और पुरुषों के बीच विद्यमान शक्ति सम्बन्धों की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिलाओं और जेंडर अध्ययन तथा जेंडर और विकास अध्ययन के ज्ञान–अनुशासनों ने सैद्धान्तिक रूप से इन मुद्दों को सम्बोधित किया है। महिलाओं और पुरुषों, उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बीच सम्बन्ध तथा अन्य लैंगिकताओं से जुड़े मिथकों को विखण्डित करने की आवश्यकता है। "जेंडर संवेदीकरण : समाज, संस्कृति और परिवर्तन" विषय पर इस पाठ्यक्रम का विशिष्ट लक्ष्य हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति के बारे में समझ निर्मित करना और इन्हें सम्बोधित करने के तरीकों की पहचान करना है। इसके लिए जेंडर की संरचना के प्रति एक नई समझ बनाने की आवश्यकता है ताकि जेंडर के दृष्टिकोण से एक न्यायपूर्ण समाज की पुनर्निर्मिति की जा सके।

पाठ्यक्रम में छह खण्ड हैं। पहले खण्ड में चार इकाइयाँ हैं जो जेंडर, लैंगिकताओं, पुरुषत्व तथा दैनिक जीवन में जेंडर से जुड़ी संकल्पनाओं पर केन्द्रित हैं। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को प्रचलित जेंडर मुद्दों से व्यापक रूप से परिचित कराता है। पाठ्यक्रम इस चीज से भी परिचित कराता है कि परिवार, समाज, संस्कृति, राज्य, कामकाज, स्वास्थ्य, कानून और मीडिया जैसे दैनिक जीवन के मुद्दों को जेंडर किस प्रकार प्रतिच्छेदित करता है। दूसरे खण्ड में 'परिवार, प्रेम और शक्ति', 'विवाह' एवं 'मातृत्व' पर तीन इकाइयाँ हैं। तीसरे खण्ड में भी तीन इकाइयाँ हैं, जो 'कार्य को जेंडरीकृत करने', 'रोजगार' और 'कार्य और श्रम बाजार के मुद्दों पर आधारित हैं। तीन इकाइयों वाला चौथा खण्ड इन बातों से परिचित कराता है कि स्वास्थ्य क्या है, जेंडर को आधार बनाते हुए किस प्रकार इसकी निर्मिति की जाती है, महिलाओं में रोगियों की अधिक संख्या तथा उच्च मृत्यु दर के कारण क्या हैं, संतानोतपत्ति के अधिकार क्या हैं तथा जेंडर और विकलांगता के मुद्दे क्या हैं। 'जेंडर, कानून और समाज' पर आधारित पाँचवें खण्ड में तीन इकाइयाँ हैं, जो कानून की जेंडरीकृत प्रकृति के तात्पर्य तथा कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से प्रारम्भ होती हैं। छठा खण्ड इस पाठ्यक्रम का अन्तिम खण्ड है और इसमें चार इकाइयाँ हैं। 'भाषा और जेंडर' इकाई जेंडर के चश्मे से भाषा और मीडिया को देखता है तथा जेंडर का अध्ययन और उसकी कल्पना करता है। इस खण्ड की अन्तिम इकाई पाठ्यक्रम के तहत की गई समस्त चर्चा का निष्कर्ष प्रस्तुत करती है और आगे का रास्ता दिखाती है। इस प्रकार, पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद शिक्षार्थी इस योग्य हो जाएँगे कि वे न सिर्फ वैयक्तिक स्तर पर, बल्कि अपने नजदीकी वातावरण जैसे– परिवार, साथियों के समूह अपने कार्यस्थल और शैक्षणिक संस्थाओं के स्तर पर भी लैंगिक असमानाताओं को चुनौती दे सकेंगे और परिवर्तन ला सकेंगे। इस तरह हमारे शिक्षार्थी जेंडर संवेदीकरण के लिए तथा जेंडर के दृष्टिकोण से एक न्यायसंगत सामाजिक पर्यावरण की रचना करने के हमारे लक्ष्य के प्रति परिवर्तन के अभिकर्ता बन सकते हैं।

नीलिमा श्रीवास्तव **जी. उमा**

खण्ड 1 जेंडर की अवधारणा का निर्माण

परिचय

इस खण्ड का लक्ष्य शिक्षार्थियों को जेंडर सम्बन्धी बुनियादी संकल्पनाओं से परिचित कराना है। "जेंडर की अवधारणा का निर्माण" नामक इस खण्ड में चार इकाइयाँ हैं। इस खण्ड की पहली इकाई का शीर्षक "जेंडर सम्बन्धी अवधारणाओं को समझना" है। सबसे पहले ज्ञानानुशासन से सम्बन्धित अवधारणाओं को जानना और सीखना महत्वपूर्ण है। एक बार जब शिक्षार्थियों की समझ इन अवधारणाओं के बारे में स्पष्ट हो जाती है, तो उनके लिए विषय की गहराई में उतरना तथा सम्बन्धित क्षेत्रों और मुद्दों को समझना आसान हो जाता है।

पहली इकाई में जिन संकल्पनाओं पर विचार किया गया है, वे हैं – जेंडर, जेंडर की भूमिकाएँ, पुरुषत्व, स्त्रीत्व, पितृसत्ता, प्रारूपों को रूढ़ बनाना (स्टीरियोटाइपिंग), नारीवाद, जेंडर आधारित हिंसा, यौन उत्पीड़न और सशक्तीकरण। हमें विश्वास है कि इन संकल्पनाओं के बारे में समझ स्पष्ट होने के बाद शिक्षार्थियों की रुचि जेंडर सम्बन्धी अन्य निर्मितियों के अध्ययन की दिशा में और अधिक जाग्रत होगी। दूसरी इकाई 'जेंडर और लैंगिकताओं' पर केन्द्रित है। इसका लक्ष्य यह है कि शिक्षार्थी गैर–मानकीय लैंगिकताओं की समझ हासिल कर सकें। यह इकाई लैंगिकता के निर्माण पर और इस बात पर भी चर्चा करती है कि किस प्रकार किसी व्यक्ति की लैंगिकता उसके दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। इस खण्ड की तीसरी इकाई 'पुरुषत्व' है, जो पुरुषत्व को परिभाषित करने के साथ शुरू होती है। इकाई समाज में पुरुषत्व के निर्माण का विस्तृत वर्णन करती है और पुरुषत्व को पितृसत्ता, हिंसा और गैर–मानकीय लैंगिकताओं के आमने–सामने रखकर देखती है। इस इकाई में पुरुषत्व के रूपों तथा पुरुषों, महिलाओं और समाज पर इनके समग्र प्रभाव का भी वर्णन किया गया है। खण्ड की अन्तिम इकाई "दैनिक जीवन में जेंडर" है, जो जेंडर को जीवन के उन पहलुओं से जोड़ती है, जिनसे हमारा प्रतिदिन सामना होता है।

शिक्षार्थी जेंडर के परिप्रेक्ष्य से अपने दैनिक अनुभवों की समीक्षा कर सकते हैं और उनकी पुनर्निर्मिति के तरीकों को खोजने का प्रयास कर सकते हैं। हम आशा करते हैं कि शिक्षार्थीगण को यह खण्ड रुचिकर लगेगा तथा वे इस पाठ्यक्रम "जेंडर संवेदीकरण – समाज, संस्कृति और परिवर्तन" से सम्बन्धित बुनियादी अवधारणाओं के प्रति जागरूक हो सकेंगे और इनकी आलोचनात्मक समझ हासिल कर सकेंगे। हम आपसे यह भी आग्रह करते हैं कि आप अपने चारों ओर गौर से देखें और यहाँ वर्णित मुद्दों का अपने दैनिक जीवन में अनुभव करें। इससे यह भी प्रतिबिम्बित होगा कि किस प्रकार ये मुद्दे न सिर्फ महिलाओं को, बल्कि पुरुषों (बालकों) को भी प्रभावित करते हैं, भले ही अलग हिसाब से और अलग तरीकों से।

नीलिमा श्रीवास्तव **जी. उमा**

इकाई 1 जेंडर सम्बन्धी अवधारणाओं को समझना

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 लिंग (सेक्स) और जेंडर

1.4 जेंडर की भूमिकाएँ

1.5 पुरुषत्व

1.6 स्त्रीत्व

1.7 सार्वजनिक और निजी विभेद

1.8 पितृसत्ता

1.9 प्रारूपों को रूढ़ करना (स्टीरियोटाइपिंग)

1.10 नारीवाद

1.11 जेंडर आधारित हिंसा

1.12 यौन उत्पीड़न

1.13 सशक्तीकरण

1.14 सारांश

1.15 शब्दावली

1.16 सन्दर्भ

1.17 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रत्येक ज्ञानानुशासन की विशिष्ट अवधारणाएं होती हैं। विस्तृत अध्ययन हेतु शिक्षार्थियों के लिए यह जरूरी है कि वे इन संकल्पनाओं को सीखें और इनकी स्पष्ट समझ रखें। इस इकाई में जिन अवधारणाओं की चर्चा की गई है, वे पाठ्यक्रम 'जेंडर संवेदीकरण – समाज, संस्कृति और परिवर्तन' से सम्बन्धित हैं। ये अवधारणाएं सिर्फ इसी पाठ्यक्रम विशेष के लिए नहीं हैं, बल्कि ये महिला अध्ययन और जेंडर अध्ययन तथा जेंडर और विकास अध्ययन के ज्ञान–अनुशासनों से सम्बन्धित आगे के अध्ययनों में भी शिक्षार्थियों की सहायता करेंगी। (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में महिला और जेंडर अध्ययन (डब्ल्यू.जी. एस.), जेंडर और विकास (जी.डी.) के लिए स्नात्कोत्तर कार्यक्रम उपलब्ध हैं।) अवधारणाओं की व्याख्या करने के साथ–साथ अधिक स्पष्टता हासिल करने के लिए हमने कुछ अभ्यास और केस स्टडीज भी प्रस्तुत किया है। सम्भव है कि इन अवधारणाओं के बारे में शिक्षार्थियों को बहुत अधिक स्पष्टता इस इकाई में हासिल न हो सके, लेकिन अन्य इकाइयों में इन अवधारणाओं की बाकायदा विस्तृत व्याख्या की गयी है। अतः पाठ्यक्रम की अन्य इकाइयों को पढ़ने से पहले शिक्षार्थी इन अवधारणाओं को सावधानीपूर्वक पढ़ें ताकि ये उन्हें स्पष्ट हो सकें। जिन अवधारणाओं की व्याख्या इस इकाई में की गयी है, वे हैं – लिंग (सेक्स) और जेंडर, जेंडर की भूमिकाएँ, पुरुषत्व, स्त्रीत्व, पितृसत्ता, जेंडर आधारित हिंसा और यौन उत्पीड़न।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अवधारणाओं को परिभाषित कर सकेंगे/सकेंगी और
- अपने दैनिक अनुभवों से जुड़ी संकल्पनाओं पर चर्चा कर सकेंगे/सकेंगी और उन्हें समझा सकेंगे/सकेंगी।

1.3 लिंग (सेक्स) और जेंडर

लिंग (सेक्स) क्या है? जेंडर क्या है? इन दोनों अवधारणाओं के बीच अन्तर कैसे किया जाए? इन दोनों अवधारणाओं के बीच भेद करना क्यों महत्वपूर्ण है? आइए, लिंग (सेक्स) और जेंडर की अवधारणाओं के बारे में जाना जाए। लिंग (सेक्स), बुनियादी स्तर पर, महिलाओं और पुरुषों के बीच का जीव–वैज्ञानिक अन्तर है। मनुष्य या तो एक पुरुष के रूप में पैदा होता है, या एक स्त्री के रूप में हालाँकि बच्चों की एक बहुत छोटी संख्या ऐसी भी है, जिनमें पुरुष और स्त्री की मिश्रित शरीर रचना पायी जाती है। स्त्री और पुरुष के जीव–वैज्ञानिक अन्तर क्रोमोसोमों (पुरुष क्रोमोसोम XY तथा स्त्री क्रोमोसोम XX होते हैं), जननांगों, हार्मोनों और अन्य शारीरिक लक्षणों में प्रतिबिम्बित होते हैं। लिंग परिवर्तन करने के लिए चिकित्सकीय पद्धतियों के उपयोग की जरूरत पड़ती है। जब हम विज्ञान या जैविक अन्तरों की बात करते हैं, तो हमारे लिए यह याद रखना भी जरूरी है कि ज्ञान के अन्य क्षेत्रों की ही तरह जीव विज्ञान भी परम सत्य या स्थिर नहीं होता। लिंग परिवर्तन की घटनाएँ हमें प्रकृति की जीव वैज्ञानिक व्यवस्था के सन्तुलन के खतरों के प्रति सावधान करती हैं।

लिंग (सेक्स) के विपरीत, जेंडर की निर्मिति सामाजिक रूप से होती है। आइए देखते हैं कि एक बार जब शिशु जन्म लेता है तो किस प्रकार यह सामाजिक निर्मिति घटित होती है। परिवार, समाज और अन्य सामाजिक–आर्थिक प्रथाओं जैसी सामाजिक संरचनाएँ शिशु के सेक्स के आधार पर विभेदों को निर्धारित करती हैं। इन विभेदों में कपड़े पहनाना, व्यवहार, सामाजिक भूमिका, स्थिति, पहचान और जिम्मेदारी शामिल होते हैं। इस प्रकार जेंडर की निर्मिति की जाती है और उसका व्यवहार किया जाता है।

आइए उदाहरणों और सचमुच के जीवन की कहानियों का प्रयोग करते हुए सेक्स और जेंडर जैसे शब्दों का परीक्षण करें। जब एक नवजात शिशु पैदा होता है तो पूरा परिवार उत्साह से जश्न मनाता है। नवजात शिशु के सेक्स के आधार पर इस जश्न में अन्तर आ जाता है। सबसे पहले परिवार और समाज, रंगों के कोड के प्रतिमान का अनुसरण करते हुए, शिशु को पहनाने के लिए कपड़ों का निर्धारण करते हैं। अगर नवजात शिशु एक बालिका है, तो लोग उसके लिए गुलाबी कपड़े तथा गुड़िया और खाना पकाने वाले बर्तनों का सेट जैसे खिलौने खरीदते हैं। जबकि अगर नवजात शिशु एक बालक है तो लोग उसके लिए नीले कपड़े तथा कार और मोटरसाइकिल जैसे खिलौने खरीदते हैं। परिवार और समाज शिशु के प्रति सधे–सधाए व्यवहार की रचना भी करते हैं, जो बालक के प्रति अलग किस्म का और बालिका के प्रति बिल्कुल दूसरे किस्म का होता है। छोटी बालिका को खूबसूरत नन्हीं परी कहा जाता है, जबकि छोटे बालक को बहादुर और मजबूत बताते हुए उसे न रोने की सलाह दी जाती है क्योंकि रोने–चिल्लाने को स्त्रियोचित गुण के रूप में देखा जाता है। इस तरह ठीक उसी क्षण से जेंडर की निर्मिति शुरू हो जाती है, जिस क्षण एक शिशु पैदा होता है।

जेंडर की निर्मिति अलग–अलग समाजों में अलग–अलग तरीकों से की जाती है। लोग मुख्य रूप से उन भूमिकाओं पर ध्यान देते हैं, जिन्हें निभाने की उम्मीद महिला और पुरुष से की जाती है। बालक और बालिका पर ऐसी भूमिकाएँ थोपने के लिए **समाजीकरण** की प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विभेदों में शामिल हैं– उत्पादक और संतानोत्पत्ति की भूमिकाएँ, पारिश्रमिक पाने वाले मुफ्त करने वाले कार्य, शक्ति सम्बन्ध और राजनीति। इन सब बातों पर विस्तृत चर्चा हम अगले हिस्से में करेंगे। पुरुषों और महिलाओं की विद्यमान भूमिकाओं और उनके बीच के सम्बन्धों को विखण्डित (Deconstruct) करके जेंडर भूमिकाओं और आचार संहिताओं पर सवाल उठाए जा सकते हैं। पुरुषों और महिलाओं पर समाज कुछ भूमिकाएँ थोपता है। सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं को इस प्रकार सीमित करती हैं कि वे कुछ निश्चित तरीकों से ही कार्य करें और कुछ निश्चित भूमिकाओं का ही निर्वहन करें, जैसे– उत्पादक और संतानोत्पत्ति की भूमिकाएँ। उदाहरण के लिए, समाज महिलाओं पर देखभाल और पालन–पोषण करने जैसी प्रजननमूलक भूमिकाओं को थोपता है। सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं को यह अहसास कराती हैं कि वे उत्पादक या सामुदायिक भूमिकाओं की तुलना में प्रजननमूलक भूमिकाओं के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

महिलाएं किस प्रकार अपनी अभिलाषाओं पर कार्य करने के लिए परिवार और अन्य सामाजिक संरचनाओं को यकीन दिलाते हुए विभिन्न स्तरों पर संघर्ष करती हैं। जेंडर सम्बन्धी व्यवहार, भूमिकाओं, पहचान और पेशे से चिपके रहने की यह उम्मीद ही जेंडर के प्रारूपों को रूढ़ बनाना है। इसे **जेंडर स्टीरियोटाइपिंग** कहते हैं।

आइए अब जेंडर सम्बन्धी कुछ प्रचलित रूढ़ प्रारूपों (स्टीरियोटाइप्स) का अध्ययन करें।

सारणी 1.1 जेंडर के प्रचलित रूढ़ प्रारूप (स्टीरियोटाइप्स)

महिला	पुरुष
परतन्त्र	स्वतन्त्र
कमजोर	शक्तिशाली
अक्षम	सक्षम
कम महत्वपूर्ण	अधिक महत्वपूर्ण
भावुक	तार्किक
परिपालन करने वाली	निर्णय लेने वाला
घर की देखभाल करने वाली	कमाने वाला
समर्थक	नेता
भयग्रस्त	बहादुर
शान्ति बनाने वाली	आक्रामक
सजग	साहसी
मृदुभाषी	मुखर

सन्दर्भ : प्रो. विभूति पटेल, एम.ए. प्रोग्राम, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय

उपरोक्त वर्णित जेंडर के रूढ़ प्रारूपों को उलटा जा सकता है और समस्त मनुष्यों (पुरुषों और महिलाओं) के लिए इनकी उपयुक्तता उनके अपने व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। आप इसके बारे में इस इकाई के अनुभाग 1.9 में विस्तार से पढ़ेंगे।

गतिविधि 1

सेक्स और जेंडर को और भी अधिक स्पष्ट तरीके से समझने के लिए कुछ ऐसी महिलाओं से मुलाकात कीजिए, जो माँ बनने वाली हों। कृपया उनसे यह पूछें कि क्या वे एक बालिका शिशु चाहती हैं या एक बालक शिशु। यदि वे बालिका शिशु को वरीयता देती हैं, तो सूची बनाने के लिए उनसे इस चीज का कारण पूछिए। अगर वे एक बालक शिशु चाहती हैं, तो भी सूची बनाने के लिए उनसे कारण पूछिए।

कुछ सम्भावित कारण नीचे दिए गए हैं :

क्र.सं.	बालिका शिशु	बालक शिशु
1.	घरेलू कामकाज और अन्य सहोदर भाई–बहनों का खयाल रखती है।	परिवार को आर्थिक रूप से सहारा देता है।
2.	पुनरुत्पादक कार्यों में संलग्न रहती है, जैसे बड़ों की देखभाल करना और उनका पोषण करना।	विवाह में खर्च कम आता है।
3.	बालिका धन की देवी लक्ष्मी और परिवार की रोशनी होती है।	माता–पिता के अन्तिम संस्कारों को सम्पन्न करता है।
4.	पूरा परिवार उसके घूमने–फिरने पर प्रतिबन्ध लगा सकता है। निर्णय उसकी तरफ से परिवार द्वारा लिए जाते हैं।	परिवार का उत्तराधिकारी है। एक बार जब बालक परिपक्व हो जाता है, तो पितृसत्तात्मक परम्पराओं के तहत वह घर का मुखिया बन जाता है।

गतिविधि 2

सेक्स/जेंडर से सम्बन्धित गुणों का वर्णन करने वाले निम्नलिखित कथनों के जवाब हाँ/नहीं में दीजिए–

1) महिलाएँ कोमल होती हैं और पुरुष सख्त।
2) महिलाएँ गर्भ धारण कर सकती हैं और पुरुष नहीं कर सकते।
3) महिलाएँ अपने बच्चों को स्तनपान कराती हैं। पुरुष बोतलों के जरिये दूध पिलाते हैं।
4) बच्चे जनना माताओं की जिम्मेदारी है।
5) पुरुष निर्णय लेते हैं।
6) पुरुषों के पास दाढ़ी–मूँछ होती है और महिलाओं के पास नहीं।
7) महिलाएँ पुरुषों की कमाई का सिर्फ सत्तर प्रतिशत ही कमा सकती हैं।
8) महिलाएँ जन्म देती हैं और पुरुष जन्म नहीं देते।
9) महिलाएँ आसानी से रो लेती हैं और पुरुष आसानी से नहीं रोते।
10) महिलाएँ हर महीने रजस्वला होती हैं।
11) लड़कों की आवाज किशोरावस्था में मोटी हो जाती है।
12) पुरुष कमानेवाला/घर का मुखिया होता है।

(एमजीएस–003 जेंडर विश्लेषण, खण्ड–1, इकाई–1 से उद्धृत)

आइए अब इसका अध्ययन करें कि जेंडर भूमिकाओं से हम क्या समझते हैं।

1.4 जेंडर भूमिकाएँ

पिछले अनुभाग में हमने पढ़ा कि लिंगों के बीच जीव वैज्ञानिक अन्तर सामान्यतः नहीं बदलते, जब तक कि कोई चिकित्सकीय हस्तक्षेप न किया जाए। हालाँकि महिलाएँ और पुरुष अपनी विशेषताओं, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को एक खास तरीके से महसूस करते हैं, जो उनके लैंगिक अन्तरों के कारण उत्पन्न नहीं होतीं। महसूस किए गए अन्तरों के आधार पर ये उनके लिए नियत कर दी जाती हैं यानी यह एक सामाजिक निर्मिति है। आसपास की सामाजिक व्यवस्था की सांस्कृतिक अपेक्षाओं के आधार पर ये भूमिकाएँ अलग–अलग समाजों के लिए अलग–अलग होती हैं। जेंडर भूमिकाओं की माँग है कि महिलाओं और पुरुषों के लिए नियत की गई गतिविधियाँ इन अलग–अलग अनुभूतियों पर आधारित हों। इसी प्रकार भूमिकाओं के ये अन्तर पुरुषों और महिलाओं को अलग–अलग पेशे चुनने की तरफ ले जाते हैं। जेंडर भूमिकाएँ पूरी तरह से पूर्व निर्धारित होती हैं, न कि ये पुरुषों या महिलाओं के कौशलों पर आधारित होती हैं। व्यापक रूप से कहा जाए तो पुरुषों की भूमिकाएँ आर्थिक गतिविधियों से जुड़ी होती हैं और राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (System of National Accounts– SNA) में इनकी गणना होती है, जबकि महिलाओं की भूमिकाएँ देखभाल और पालन–पोषण से सम्बन्धित होती हैं। बहुत सम्भव है कि इनकी गणना SNA में न की जाए, जैसे–खाना पकाना, साफ–सफाई करना तथा बच्चों और वृद्धों की देखभाल करना। हालाँकि, सम्भव है कि पुरुष ये घरेलू काम न करते हों।

बॉक्स सं. 1.1

कैरोलिन मोजर के अनुसार अधिकांश विकासशील देशों में महिलाओं पर तिहरा बोझ होता है। उनको तीन तरीके की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है–प्रजननमूलक, उत्पादक तथा सामुदायिक प्रबन्धन और सामुदायिक राजनीति।

प्रजननमूलक भूमिकाओं में बच्चे जनना, बच्चे पालना, परिवार के वृद्धों की देखभाल करना तथा घरेलू कामकाज शामिल है। इन प्रजननमूलक भूमिकाओं के साथ–साथ महिलाएँ द्वित्तीयक आय अर्जकों के रूप में उत्पादक भूमिकाएँ भी निभाती हैं। महिलाओं द्वारा सम्पन्न की गई इन गतिविधियों की गणना आर्थिक गतिविधियों के रूप में नहीं की जाती। इसे राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (SNA) में सम्मिलित नहीं किया जाता। महिलाओं की उत्पादक भूमिकाओं में शामिल हैं – अंशकालिक आर्थिक गतिविधियाँ, खेती–किसानी का काम करके मजदूरी लाना, दुधारू पशुओं की देखभाल करना तथा शहरी इलाकों में अनौपचारिक क्षेत्रकों में संलग्न होना।

इन सबके अतिरिक्त, महिलाएँ सामुदायिक प्रबन्धन और सामुदायिक राजनीति में भी शामिल होती हैं। इसे उनके उत्पादक कार्यों के विस्तार के रूप में देखा जाता है। इन गतिविधियों और भूमिकाओं में सामूहिक उपभोग के लिए सामुदायिक परिसम्पत्तियों की व्यवस्था और उनका रखरखाव शामिल होता है। महिलाएँ समस्त समुदाय की स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के कार्य में भी संलग्न होती हैं। महिलाओं द्वारा निभायी जाने वाली इन सामुदायिक भूमिकाओं के लिए उन्हें किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता। महिलाओं के विपरीत, पुरुष जब सामुदायिक राजनीति और गतिविधियों का यही कार्य करते हैं, तो उन्हें इसके एवज में भुगतान मिलता है, चाहे नकद रूप में या वस्तु रूप में।

अनेक समाजों में महिलाएँ खेती–किसानी और पशुपालन के लिए भूमि या खेत के छोटे टुकड़ों की देखभाल करने जैसी उत्पादक गतिविधियों को भी सम्पन्न करती हैं। इस कामकाज को प्रायः कार्य के रूप में नहीं देखा जाता और अक्सर इस कामकाज के बदले महिलाओं को कोई भुगतान भी नहीं मिलता। महिलाएँ बहुत–सी ऐसी भूमिकाएँ भी निभा सकती हैं, जो औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों, आर्थिक क्षेत्रकों में मजदूरी को आकृष्ट करती हैं। लेकिन, पुरुषों के विपरीत, महिलाओं की आर्थिक रूप से उत्पादक भूमिकाओं को अक्सर कम आँका जाता है या उन्हें तुलनात्मक रूप से बहुत कम महत्व दिया जाता है।

विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न समयों में जेंडर भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ बदलती रहती हैं। उदाहरण के लिए, अकुशल श्रम को भारत में 'महिलाओं के कार्य' के रूप में, जबकि अफ्रीका में 'पुरुषों के कार्य' के रूप में देखा जाता है। इसी तरह यूरोप और संयुक्त राज्य अमरीका में घरेलू गतिविधियों में पुरुषों की भूमिका अधिकाधिक प्रत्यक्ष होती जा रही है। पुरुषों और महिलाओं की अलग–अलग भूमिकाओं और गतिविधियों के आधार पर पुरुषों और महिलाओं की जरूरतें भिन्न–भिन्न हो जाती हैं।

आगे अध्ययन करने से पहले, अब तक पढ़ी गई अवधारणाओं के बारे में अपनी समझ का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित अभ्यास कार्य कीजिए।

प्रगति परीश्रम अभ्यास

लिंग (सेक्स) और जेंडर की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब इस बात का अध्ययन करें कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व से क्या तात्पर्य होता है।

1.5 पुरुषत्व

पुरुषत्व (masculinity) शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्दों 'masculinus' और 'masculus' से हुई है, जिनका अर्थ क्रमशः 'पुरुष व्यक्ति' और 'पुरुष' होता है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम चौदहवीं शताब्दी में 'पुरुष लिंग (सेक्स)' के अर्थ में किया गया था। इस शब्द का प्रयोग पुरुषों के विशिष्ट गुणों को सन्दर्भित करने के लिए किया जाता है। पुरुषत्व के लक्षण हैं–मजबूती, बल, पुरुषोचित हिम्मत और मर्दानगी। पुरुषत्व पर सन् 1960 और 1970 के दशकों के विद्वतापूर्ण अध्ययनों ने यह समझा कि महसूस और ग्रहण की गई विशेषताएँ पुरुष पहचान को निर्धारित करती हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया के तहत प्राप्त किए गए

सांस्कृतिक मानक और मूल्य आक्रामकता, महत्वाकांक्षा, विश्लेषणात्मक योग्यता और मुखरता जैसे पुरुष अभिलक्षणों को हासिल करने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। सन् 1979 में **रायविन कॉनेल** द्वारा लिखे गये एक विद्वतापूर्ण पर्चे (कॉनेल 1983) ने बालकों में शरीर की सामाजिक निर्मिति के बारे में चर्चा की थी। अपने स्कूली दिनों में बालक खेलकूद को अधिक महत्व देते हैं। वे शारीरिक गठन, ताकत और मजबूती के विकास पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। इस विद्वषी विद्वान ने आगे यह भी समझाया था कि बालकों और पुरुषों में पुरुषोचित विशेषताओं को विकसित करने का अभियान समाजीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है।

1.6 स्त्रीत्व

स्त्रीत्व महिलाओं से जुड़े गुणों, व्यवहारों, वेशभूषा, विशेषताओं, शारीरिक बनावट, अभिलक्षणों, मुद्राओं का सांस्कृतिक रूप से निर्मित समुच्चय है। यह प्राकृतिक नहीं है, बल्कि निर्मित है और इसका उत्पादन सामाजिक रूप से होता है। फ्रांसीसी दार्शनिक **सिमोन द बोउवार** (1949) ने लिखा था कि 'स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बनायी जाती है।' **जुडिथ बटलर** के मुताबिक अभिनय यानी प्रदर्शन के बार–बार किए जाने वाले कार्य स्त्रीत्व का भ्रम रचते हैं। यह स्त्रीत्व स्वभावगत और देशीयकृत हो जाता है तथा जेंडर और स्त्री गुणों/पहचानों की निर्मिति करता है। स्त्रीत्व पर अध्ययन नव–उदारवाद, संस्कृति, जाति और अन्य सामाजिक संरचनाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। यह अध्ययन इस बात पर भी अपना ध्यान केन्द्रित करता है कि ये संरचनाएँ किस प्रकार महिलाओं की स्वतन्त्रता और उन्हें मिलने वाले अवसरों को प्रतिबन्धित करती हैं और किस प्रकार महिलाओं के दमन और जेंडर असमानता को बढ़ाती हैं। उदाहरण के लिए, महिलाएँ हालिया समय में यूरोपीय संघ में रोजगार के पीछे प्रेरक शक्ति रही हैं। इसके बावजूद वहाँ वेतन को लेकर जेंडर अन्तराल कायम है (www-ec-europa-eu; यूरोपीय आयोग)। निम्नलिखित सारणी आपके सामने भारत में जेंडर असमानता का एक चित्र खींचती है।

सारणी 1.3 : जेंडर असमानताएँ–भारत में कुछ सूचक

जनांकिकीय प्रोफाइल				
जनसंख्या	इकाई	1991	2001	2011
कुल	करोड़	84.6	102.9	121.1
महिला	करोड़	40.7	49.6	58.7
पुरुष	करोड़	43.9	53.2	62.3
लिंगानुपात				
सम्पूर्ण भारत		926	933	943
ग्रामीण		938	946	949
शहरी		893	900	929
जीवन प्रत्याशा	वर्ष	2001–05	2006–10	2011–15
पुरुष		63.1	64.6	67.3
महिला		65.6	67.7	69.6

साक्षरता दर (सात से अधिक वर्ष)	प्रतिशत	1991	2001	2011
कुल		52.21	64.84	72.99
पुरुष		64.13	75.26	82.14
महिला		39.29	53.67	65.46
उच्च शिक्षा	प्रतिशत	1950–51	2005–06	2013–14
कुल		उपलब्ध नहीं	11.16	21.1′
पुरुष		उपलब्ध नहीं	13.5	22.3
महिला		उपलब्ध नहीं	9.4	19.3

सन्दर्भ : भारत आँकड़े 2015, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मन्त्रालय **(अनन्तिम)**

सारणी 1.3 स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जेंडर अन्तर और असमानताएँ सभी स्तरों पर मौजूद हैं। पूरे विश्व में निर्धनों का बहुलांश महिलाएँ ही हैं। अपनी पुस्तक 'आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका' में अफ्रीकी कृषि प्रतिमान पर एस्थर बोसरप के कार्य से प्राप्त प्रमाण भी स्पष्ट रूप से बताते हैं कि महिलाएँ खाद्य उत्पादन में संलग्न रहती हैं। लेकिन खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) के अनुसार अधिकांश समाजों में भूमि का स्वामित्व पुरुषों के पास रहता है।

1.7 सार्वजनिक और निजी विभेद

सार्वजनिक और निजी के बीच का विरोधाभास महिलाओं को घर तक सीमित करता है और उनके घूमने–फिरने पर प्रतिबन्ध लगाता है। इसके अलावा यह विरोधाभास महिलाओं को देखभाल करने और पालन–पोषण करने जैसी घरेलू भूमिकाएँ निभाने के लिए बाध्य करता है। महिलाओं के भौतिक स्वावलम्बन और शिक्षा तक उनकी पहुँच के लिए सार्वजनिक और निजी के बीच के विरोधाभास के महत्वपूर्ण परिणाम होते हैं। सार्वजनिक और निजी का सवाल मताधिकार और जीवन के अन्य क्षेत्रों में समान सहभागिता के लिए महिलाओं के संघर्ष में केन्द्रीय तत्व रहा है। निजी का सम्बन्ध घरेलू क्षेत्र के भीतर की जाने वाली गतिविधियों से है तथा सार्वजनिक में घरेलू क्षेत्र से बाहर की गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

नारीवादियों के विचार में यह विभेद पदसोपानीय ऊँच–नीच की व्यवस्था पर आधारित और पितृसत्तात्मक है। यह विभाजन महिलाओं को अधीनस्थ भूमिकाओं और प्रस्थिति की तरफ ले जाता है। निजी और सार्वजनिक का यह अलगाव महिलाओं को उनकी संतानोत्पत्ति की भूमिकाओं के कारण उन्हें निजी क्षेत्रों तक ही सीमित रखता है तथा पुरुषों को यह अलगाव सार्वजनिक क्षेत्र में अर्थव्यवस्था, व्यवसाय, राजनीति और कानून के क्षेत्रों में स्थित करता है।

1.8 पितृसत्ता

पितृसत्ता को पिता के शासन के रूप में परिभाषित किया जाता है। पितृसत्तात्मक संस्थाएँ पुरुष के प्रभुत्व को मजबूत बनाती हैं और महिला को अधीन स्थिति में रखती हैं। प्रभावी शक्ति सम्बन्ध समाज में विभिन्न स्तरों पर संचालित होते हैं और सभी स्तरों पर महिलाओं/बालिकाओं के प्रति भेदभाव करते हैं। यह भेदभाव महिलाओं के लिए न सिर्फ

अवसरों को कम करता है और महिलाओं के अभिकर्तृत्व को कमजोर करता है, बल्कि यह महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को भी जन्म देता है। इसके अतिरिक्त पितृसत्ता निजी क्षेत्र की सीमा निर्धारित करती है और इस बात पर जोर देती है कि निजी क्षेत्र महिलाओं के लिए तथा सार्वजनिक क्षेत्र पुरुषों के लिए होता है। पितृसत्तात्मक मानक परिवार, समाज, राजनीति, सरकार, मीडिया और धर्म जैसी सामाजिक संरचनाओं में प्रभावी रहते हैं। पितृसत्तात्मक समाज में सम्पत्ति का उत्तराधिकार पुत्र को मिलता है और इसे पितृवंशीय उत्तराधिकार कहा जाता है। पितृसत्तात्मक परम्परा और पितृकेन्द्रित व्यवस्था में विवाह के बाद महिलाओं से अपने पति के घर आने और वहीं बस जाने की उम्मीद की जाती है।

आइए अब निम्नलिखित अनुभाग में जेंडर प्रारूपों को रूढ़ करने (स्टीरियोटाइपिंग) के बारे में अध्ययन करें।

1.9 प्रारूपों को रूढ़ करना (स्टीरियोटाइपिंग)

स्त्रीवाचक और पुरुषवाचक गुणों और विशेषताओं पर बार–बार जोर देना ही जेंडर प्रारूपों को रूढ़ करना (जेंडर स्टीरियोटाइपिंग) है। **जेंडर स्टीरियोटाइप** ऐसे विश्वास हैं जो बताते हैं कि पुरुषों और महिलाओं को क्या नहीं करना चाहिए और वे क्या कर सकते हैं। समय बीतने के साथ इनमें परिवर्तन किया जा सकता है। लेकिन, ये परिवर्तन बहुत धीमे होते हैं। हम जेंडर स्टीरियोटाइप्स के कुछ उदाहरण देख सकते हैं। महिलाओं से उम्मीद की जाती है कि वे परिवार की देखभाल करें, पालन–पोषण करें, दयालु और उदार हों तथा बच्चों में उनकी रुचि हो। अधिकांश समाजों में उपरोक्त वर्णित गुण महिलाओं के लिए ही उपयुक्त समझे जाते हैं। बुद्धिमत्ता जैसे गुण पुरुषों और महिलाओं, दोनों, में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। दक्षिण एशियाई समाजों में महिलाओं को आकर्षक होना चाहिए, उन्हें अच्छे कपड़े पहनने चाहिए तथा रोजाना के घरेलू कामों में उन्हें निपुण होना चाहिए। पेशे के सन्दर्भ में, एशियाई समाजों में लड़कियों को पारम्परिक पेशे अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन पारम्परिक पेशों में मुख्य रूप से शामिल हैं–शिक्षण या चिकित्सा कार्य, जो संतानोत्पत्ति की भूमिकाओं यानी देखभाल और पालन–पोषण करने से सम्बन्धित हैं।

जेंडर स्टीरियोटाइप्स के कारण पुरुषों और महिलाओं के लिए अपनी–अपनी भूमिकाओं को उलटने की प्रक्रिया धीमी होती है और विभिन्न स्तरों पर निष्पादन में संघर्ष पैदा होता है। मीडिया, खासतौर पर मुद्रित और दृश्य मीडिया (टेलीविजन और सिनेमा) जेंडर स्टीरियोटाइपिंग में योगदान देता है। अधिकांश कॉमर्शियल सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिक पुरुषों को पुरुषत्व के गुणों के साथ चित्रित करते हैं। लोकप्रिय सिनेमा और टेलीविजन में महिलाओं को अधिकांशतः दूसरों पर निर्भर दिखाया जाता है और वे स्त्रीवाचक भूमिकाओं का निर्वहन करती हैं।

पिछले अनुभाग में सीखी गयी बातों के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित अभ्यास करें।

प्रगति परीश्रम अभ्यास

1) पुरुषों और महिलाओं में जेंडर को रूढ़ बनाने (जेंडर स्टीरियोटाइपिंग) के दो उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

2) पुरुषत्व और स्त्रीत्व को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

नीचे दिए गए अनुभागों में आप कुछ और ऐसी अवधारणाओं के बारे में पढ़ेंगे, जो चीजों को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझने में आपकी सहायता करेंगी।

1.10 नारीवाद

नारीवाद एक आन्दोलन है। यह महिलाओं की हीन प्रस्थिति पर सवाल खड़े करता है। यह आन्दोलन माँग करता है कि पुरुषों और महिलाओं की प्रस्थिति एकसमान हो। यह एक विचारधारा भी है जो महिलाओं को सशक्तीकृत करने की दिशा में कार्य करती है। यह एक सामूहिक चेतना है। कोई भी व्यक्ति या समूह जेंडर समानता और जेंडर न्यायसंगतता (equity) के लिए प्रयास कर सकता है तथा महिलाओं के विरुद्ध होने वाले दमन, अन्याय, शोषण और हिंसा के खिलाफ लड़ सकता है।

'नारीवाद (फेमिनिस्ट)' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1871 में फ्रांस में चिकित्सकीय पुस्तकों में किया गया था। नारीवाद को उन आन्दोलनों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, जो विभिन्न ऐतिहासिक अवधियों में उभरे। नारीवाद की पहली लहर की अवधि उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध थी। उस अवधि के दौरान महिलाओं को मताधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया गया था। नारीवाद की दूसरी लहर की गतिविधियाँ 1960 और 1970 के दशकों में मौजूद थीं। इसमें लोगों ने महिलाओं के लिए परिवार में, कार्यस्थल पर और लैंगिकता (Sexuality) के सन्दर्भ में पुरुषों के समान अधिकारों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। 1990 के दशक के प्रारम्भ में नारीवाद की तीसरी लहर शुरू हुई और यह अब तक जारी है।

1.11 जेंडर आधारित हिंसा

जेंडर आधारित हिंसा (Gender Based Violence — GBV) 'किसी व्यक्ति के साथ भेदभाव करके की गई हिंसा का अनुभव है। यह भेदभाव उस व्यक्ति के लिंग, प्रजाति, वर्ग, धर्म, लैंगिकता (Sexuality), योग्यता और स्थितिपरक कारकों के आधार पर किया जाता है। 1970 के दशक के **'बैटर्ड विमेन'** आन्दोलन ने जेंडर आधारित हिंसा की अवधारणा के उभार में बहुत योगदान दिया है। यह आन्दोलन नारीवाद की दूसरी लहर का एक हिस्सा था।

जेंडर आधारित हिंसा से जुड़े मुद्दों को सम्बोधित करने में महिलाओं और नारीवादियों के लिए संयुक्त राष्ट्र का महिला केन्द्रित दशक मददगार रहा है। चार अन्तरराष्ट्रीय महिला सम्मेलनों ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में हिंसा की पहचान की तथा नीति के सन्दर्भ में एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया।

1.12 यौन उत्पीड़न (Sexual Harassment)

यह कार्यस्थल पर जेंडर आधारित लैंगिक (सेक्सुअल) हिंसा है। अवांछनीय लैंगिक हरकतों के जरिये दूसरों को धमकाना तथा कार्यस्थल पर प्रतिकूल वातावरण पैदा करना भी यौन उत्पीड़न है। इसमें लैंगिकता के रंग में रंगे इशारे करना, स्पर्श करना, चिढ़ाना, लैंगिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए माँग करना, अश्लील चीजें दिखाना तथा यौनिक प्रकृति का कोई अन्य अवांछनीय शारीरिक, मौखिक या अमौखिक आचरण करना शामिल है। यौन उप्पीड़न पीड़ित महिलाओं को बहुत बुरी तरह प्रभावित करता है। सिंगापुर (अवेयर, 2008) में पाँच सौ उत्तरदाताओं के मध्य एक अध्ययन किया गया और पाया गया कि आधे से अधिक लोगों ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का दंश झेल रखा था। इस पाठ्यक्रम की इकाई 16 कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के मुद्दे पर विस्तार से विचार करेगी।

1.13 सशक्तीकरण

नाइला कबीर सशक्तीकरण को इस रूप में परिभाषित करती हैं कि "इसमें, एक सन्दर्भ में, जीवन में लोगों की रणनीतिक चयन करने की योग्यता में विस्तार आ जाता है, जहाँ पहले यह चयन करने की मनाही होती थी।" नाइला कबीर सशक्तीकरण के तीन आयामों को वर्णित करती हैं :

1) संसाधन (परिस्थितियाँ),
2) अभिकरण (प्रक्रिया), और
3) उपलब्धि।

सशक्तीकरण की प्रक्रिया में, महिलाएँ और पुरुष दोनों अपने–अपने जीवन पर नियन्त्रण रखते हैं। अपनी–अपनी कार्यसूचियाँ वे स्वयं तय करते हैं। वे कौशल हासिल करते हैं। वे आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। वे अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं और आत्मनिर्भरता का विकास करते हैं।

1.14 सारांश

इस इकाई में आपने जेंडर को समझने से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं का अध्ययन किया है। इन अवधारणाओं को समझकर आप इस योग्य हो जाएँगे/जाएंगी कि अपने दैनिक जीवन में जेंडर के निहितार्थों को समझ सकें। यह समझ समाज के सत्तासीन वर्ग में जेंडर के विशेषाधिकारों के बारे में सीखने में मदद करेगी तथा दूसरी तरफ उस वर्ग को भी समझने में मदद करेगी जो उतने शक्तिशाली नहीं हैं, सुभेद्य हैं और समाज में हाशिये पर हैं।

1.15 शब्दावली

समाजीकरण : यह जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी में बदलने की प्रक्रिया है। जन्म के समय एक शिशु जीव–वैज्ञानिक इकाई होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में बालक या बालिका होने के लिए यह जीव–वैज्ञानिक इकाई जेंडर के अभिलक्षणों को ग्रहण करती है।

सामाजिक संरचना : इसमें शामिल हैं–सामाजिक संस्थाएँ (उदाहरण के लिए, परिवार, विवाह और नातेदारी), सामाजिक व्यवहार (संस्कार और अनुष्ठान) और सामाजिक प्रक्रियाएँ (जैसे–समाजीकरण और आत्मसातीकरण/आधुनिकीकरण)।

राष्ट्रीय लेखा प्रणाली : राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एस.एन.ए.) समष्टि–अर्थशास्त्रीय लेखाओं, तुलन पत्रों (बैलेंस शीट्स) और अन्तरराष्ट्रीय रूप से स्वीकृत संकल्पनाओं, परिभाषाओं, वर्गीकरणों और लेखा नियमों के एक सुसम्बद्ध, सुसंगत और एकीकृत समुच्चय से मिलकर बनी होती है।

1.16 सन्दर्भ

Evans, Mary and Carolyn H. Williams. 2013. *Gender the Key Concepts*. Oxon: Routledge.

Freedman. 2002. *Feminism*. New Delhi: Viva Books Private Limited.

Lips, Hilary M. 2014. *Gender the basics*. Oxon: Routledge.

Vatsyayan, Kapila. 2016. *Womentrepreneurs*. New Delhi: Sage Publication.

Woodward, Kath .2012. *The Short guide to gender*. New Delhi: Rawat Publications.

1.17 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) उपयुक्त उदाहरणों के साथ सेक्स और जेंडर की अवधारणाओं की चर्चा कीजिए।

2) जेंडर भूमिकाएँ क्या हैं? अपने दैनिक जीवन से कुछ उदाहरण दीजिए।

3) पितृसत्ता क्या है? कुछ उदाहरण दीजिए।

4) नारीवाद क्या है? इसके विभिन्न प्रकार क्या–क्या हैं?

5) एक उपयुक्त उदाहरण के साथ सशक्तीकरण शब्द की व्याख्या कीजिए।

इकाई 2 जेंडर और लैंगिकताएँ (Sexualities)

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 लैंगिकता (Sexuality) : अवधारणा

2.4 लैंगिकता की सामाजिक निर्मिति

2.5 लैंगिकता–जीवन का एक पहलू

2.6 लैंगिक श्रेणीतन्त्र

2.7 समान यौन इच्छाएँ

2.8 अच्छी महिलाएँ : लैंगिकता के साथ सम्बन्ध

2.9 यौन सुख और सशक्तीकरण

2.10 सारांश

2.11 सन्दर्भ

2.12 अभ्यास के प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) से सम्बन्धित कोई भी कार्य करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि लैंगिकता सामाजिक रूप से निर्मित की गयी चीज है। जब हम लैंगिकता और यौन इच्छाओं की बात करते हैं, तो हमारे सामने ऐसे विचार आते हैं कि क्या 'प्राकृतिक' है और क्या 'अप्राकृतिक'। 'प्राकृतिक' और 'अप्राकृतिक' के ऐसे विचारों का प्रयोग अक्सर लैंगिकताओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो कि 'मानकीय' नहीं होता।

लैंगिकता का महिलाओं के सशक्तीकरण के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध है? यदि सचमुच ऐसा कोई सम्बन्ध है तो, भारत में वर्तमान सन्दर्भ में, लैंगिकता के मुद्दों और समान यौन इच्छाओं के मुद्दों के साथ महिलाओं के समूहों की तरफ से इस संलग्नता की प्रकृति क्या रही है?

इन लक्ष्यों की तरफ आगे बढ़ते हुए जिन मुद्दों की इस इकाई में चर्चा की गई है, उनमें विचारों से जुड़े हुए आवश्यकतावाद (Essentialism) को और लैंगिकता से जुड़ी हुई पहचानों को चुनौती देना शामिल है। इसमें ये मुद्दे भी शामिल हैं कि लैंगिकता हमारे जीवन को किस तरह प्रभावित करती है तथा लैंगिकता के आधार पर किया गया हाशियाकरण किस प्रकार लैंगिक श्रेणीतन्त्र की तरफ ले जाता है।

इस इकाई में उपरोक्त मुद्दों से सम्बन्धित न सिर्फ सैद्धान्तिक कार्य पर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया है, बल्कि कार्यशालाओं/जीवन की घटनाओं/कल्पित लेखों–जोखों के दौरान किए गए वार्तालापों पर भी ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश की गई है। इनके इर्द–गिर्द प्रश्न पूछे गए हैं ताकि उन मुद्दों से गहराईपूर्वक तादात्म्य स्थापित हो सके, जिन पर यहाँ चर्चा की जा रही है।

आइए, इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्यों पर निगाह डालें।

2.2 उद्देश्य

यह इकाई कोशिश करती है कि :

- लैंगिकता की सामाजिक निर्मिति को समझने में शिक्षार्थियों को सुविधा हो;
- पितृसत्ता के व्यापक ढाँचे (फ्रेमवर्क) में लैंगिकता को समझने में सुविधा हो; और
- इस बात पर चर्चा हो सके कि लैंगिकता किस प्रकार हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करती है।

2.3 लैंगिकता (Sexuality) : अवधारणा

मनुष्य के लिए लिंग (सेक्स), जेंडर पहचानें और भूमिकाएँ, लैंगिक झुकाव, आनन्द, अन्तरंगता और संतानोत्पत्ति केन्द्रीय पहलू के रूप में जीवन भर शामिल रहते हैं। लैंगिकता विचारों, कल्पनाओं, इच्छाओं, विश्वासों, अभिवृत्तियों, मूल्यों, व्यवहारों, भूमिकाओं और सम्बन्धों में अभिव्यक्त होती है और महसूस की जाती है। हालाँकि लैंगिकता इन समस्त आयामों को शामिल कर सकती है, परन्तु ये सभी आयाम हमेशा महसूस या अभिव्यक्त नहीं किए जाते। लैंगिकता जीव–वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, कानूनी, ऐतिहासिक और धार्मिक तथा आध्यात्मिक कारकों के सापेक्ष प्रभावित होती है (विश्व स्वास्थ्य संगठन, ड्राफ्ट वर्किंग डेफिनिशन, अक्तूबर 2002)।

2.4 लैंगिकता (Sexuality) की सामाजिक निर्मिति

निम्नलिखित केस स्टडी को पढ़ें और इस पर चिन्तन करें।

मेरा नाम अनुपमा है। मुझे भोजन पसन्द है। फिर भी, मेरे लिए यह बता पाना बहुत मुश्किल है कि मुझे कौन–सी चीज सबसे अधिक पसन्द है। पर अगर मुझे बताना ही हो... खाने की मेरी पसन्दीदा चीजों में गोल गप्पे सबसे ऊपर हैं। आप में से उन लोगों के लिए, जिन्होंने कभी गोल गप्पे खाने का आनन्द न लिया हो, यह बताना जरूरी है कि गोल गप्पे भुने हुए आटे की गोलियाँ होते हैं, इनमें उबले हुए काबुली चने, उबले हुए आलू के गूदे और मसालेदार, सुगन्धित पानी जैसी चीजें भरी होती हैं (उन लोगों से क्षमायाचना, जिन्हें गोल गप्पे पसन्द हैं क्योंकि ये उन्हें पसन्द हैं और यहाँ उसका तकनीकी वर्णन किया गया)। और अगर आप मुझसे पूछें कि मुझे कौन–सी चीज सबसे ज्यादा नापसन्द है, तो वह है चिकन बिरयानी। यह कुछ ऐसी चीजों में है, जिन्हें हैदराबाद के अपने अनुभवों के कारण मैं पसन्द नहीं करती। असल में, चिकन बिरयानी या किसी भी तरीके का मांस मैंने पहली बार हैदराबाद में ही चखा, जब दो साल पहले मैं अजमेर से हैदराबाद आयी थी।

जब मैं बच्ची थी, तब मुझे मांसाहारी भोजन करने की इजाजत नहीं थी। मेरे दो भाई और मेरे पिता मांस खाते थे, लेकिन मेरी माँ नहीं खाती थीं, और न ही मुझे खाने देती थीं। यह तब था, जबकि हम क्षत्रिय हैं और हमारे यहाँ मांसाहार पर कोई रोक नहीं होती। मेरी माँ मांस घर में पकाती थीं, लेकिन वे खुद नहीं खाती थीं और न ही, जैसाकि मैंने कहा, मुझे खाने देती थीं। इस बात को लेकर मैं सचमुच बहुत क्रोधित और आक्रोशित रहते हुए बड़ी हुई।

जब मुझे एक नौकरी मिली और मैं लखनऊ गई (उस समय मेरी उम्र पच्चीस साल की थी), तो वहाँ सबसे पहले मैंने यही काम किया कि मांस खाना शुरू किया। मैंने वहाँ एक दोस्त

बनाया जिसका नाम पुष्पा था। वह बहुत स्वादिष्ट खाना पकाती है और खासतौर पर उसके बनाए चिकन कोरमा का पूरी दुनिया में कोई जवाब नहीं है। हालाँकि, मैंने महसूस किया कि तन्दूरी चिकन मुझे पसन्द नहीं है। यह मुझे सूखा और स्वादहीन लगता है। भगवान ही जाने कि किस तरह इतने सारे लोग तन्दूरी चिकन के दीवाने बने रहते हैं। सामान्यतः हम एक–दूसरे के घर जाकर खाया करते थे। हालाँकि जब वह तन्दूरी चिकन बनाती थी, तो मैं इडली, डोसा, ब्रेन करी या कबाब वगैरह खाने बाहर चली जाती थी। लखनऊ में मैंने ब्रेन करी के आनन्द की खोज की। शुरू में तो इसे खाने में मुझे हिचकिचाहट होती थी और यह मुझे जाने–पहचाने स्वाद जैसा लगता था, लेकिन अब मुझे यह बहुत पसन्द है। मेरी माँ इस चीज के बार में क्या सोचेंगी, जो मेरे लिए इतनी अद्‌भुत वस्तु है!

आइए, निम्नलिखित पर चिन्तन करें :

- आमतौर पर यह माना जाता है कि भोजन में स्वाद जीव–वैज्ञानिक, प्राकृतिक, सहज–वृत्ति से युक्त और नियत होता है। अनुपमा की कहानी पढ़ने के बाद क्या आप इससे सहमत होंगे या असहमत? क्यों?

- अपने जवाब में आप शायद इस बात से सहमत हो सकते हैं कि भोजन में स्वाद जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म और क्षेत्र से अत्यधिक प्रभावित होता है यानी इसकी निर्मिति सामाजिक रूप से की जाती है।

- अपने जेंडर के कारण अनुपमा अपने घर पर मांस नहीं खा सकती थी। उसके भाई और पिता खा सकते थे क्योंकि वे पुरुष थे। अगर वे ब्राह्मण होते तो सम्भव था कि वे मांसाहारी न हुए होते। जब अनुपमा लखनऊ गई, तब यह हुआ कि भाँति–भाँति के व्यंजन उसके सामने आए। और उसने विभिन्न किस्म के व्यंजनों का स्वाद लिया।

- अनुपमा ने मांसाहार पच्चीस साल की उम्र में शुरू किया। यह भी, कि अनुपमा शुरू–शुरू में ब्रेन करी को चखने तक के लिए अनिच्छुक थी, और बाद में वह ब्रेन करी पसन्द करने लगी।

इसलिए हम कह सकते हैं कि अनुपमा

i) व्यापक मस्तिष्क की है (जो चीज मुझे पसन्द है, सम्भव है कि आप उस चीज से घृणा करते हों)। तमाम ऐसी चीजें हैं, जिन्हें खाना अनुपमा को पसन्द है। जबकि पुष्पा तन्दूरी चिकन पसन्द करती है, अनुपमा नहीं पसन्द करती।

ii) इसके सकारात्मक और नकारात्मक आयाम हैं।

अनुपमा को भोजन पसन्द है। भोजन उसके लिए आनन्द का स्रोत और खोजबीन की चीज रहा है। हम यह भी जानते हैं कि एक लड़की के रूप में अनुपमा इस बात को लेकर बहुत खिन्न थी कि उसे मांस खाने की इजाजत क्यों नहीं दी गई थी। यह एक भेदभाव था, जिस पर उसे आक्रोश था। भोजन को लेकर अनुपमा का अनुभव दोनों तरह का था, अपनी भलाई की भावना को बढ़ाने वाला और घटाने वाला भी।

आपको आश्चर्य हो सकता है कि आप अनुपमा की खाने की आदतों के बारे में इतने अधिक विस्तार से क्यों पढ़ रहे हैं और विश्लेषण कर रहे/रही हैं। या शायद आपने पहले ही अनुमान लगा लिया हो, कि आप ऐसा क्यों कर रहे/रही हैं।

प्रश्न–जो पड़ताल आपने ऊपर की, उसके आयामों और लैंगिकता के बीच क्या आप कोई समानताएँ देखते/देखती हैं?

इस पर भली प्रकार तर्क किया जा सकता है कि भोजन में स्वाद के बारे में जितनी भी बातें कही जा सकती हैं, वे सारी बातें लैंगिकता के लिए भी सत्य होती हैं। आइए, उपरोक्त चर्चा में 'भोजन में स्वाद' की जगह पर 'लैंगिकता' रखें और देखें कि क्या सचमुच ऐसा है।

लैंगिकता...

- जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म और क्षेत्र से अत्यधिक प्रभावित होती है यानी इसकी निर्मिति सामाजिक रूप से की जाती है।
- नियत नहीं होती, बल्कि परिवर्तनीय होती है और प्रवाहमान होती है
- विविध और व्यापक होती है (जो चीज मुझे पसन्द है, सम्भव है कि आप उस चीज से घृणा करते हों)
- के सकारात्मक और नकारात्मक आयाम होते हैं।

विविधता

हमारी यौन इच्छाओं को आकार देने वाली प्रत्येक चीज–हम किसकी तरफ आकृष्ट होते हैं और हमें यौन सन्तुष्टि कैसे मिलती है – में विविधता है। सामान्यतः यह मान लिया जाता है कि आकर्षण सिर्फ महिलाओं और पुरुषों के बीच ही घटित हो सकता है। हालाँकि, चूँकि इच्छाएँ प्रवाहमान होती हैं, आकर्षण किन्हीं भी दो व्यक्तियों के बीच घटित हो सकता है। उदाहरण के लिए, यौन आकर्षण दो महिलाओं या दो पुरुषों के बीच भी घटित हो सकता है।

इच्छाओं के रंग अनेक होते हैं। असल बात यह नहीं है कि आप किसकी तरफ आकृष्ट होते हैं, बल्कि यह है कि आप किस प्रकार की इच्छाओं का अहसास करते हैं। आमतौर पर लोग जब 'सेक्स' शब्द को सुनते हैं, तो इसका अर्थ वे एक पुरुष और एक स्त्री के बीच होने वाले शारीरिक सम्बन्ध से ही लगाते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि इस तरीके के लैंगिक कार्य का सम्बन्ध वंशवृद्धि, संतानोत्पत्ति और सन्तान से होता है, जबकि हम जानते हैं कि सेक्स केवल प्रजनन के लिए ही नहीं किया जाता, बल्कि आनन्द और इच्छापूर्ति के लिए किया जाता है।

अगर विविधता न हो, तो दुनिया कैसी होगी

कल्पना कीजिए कि आज सरकार ने एक आदेश जारी किया है कि सभी महिलाओं को पीली साड़ी पहननी चाहिए और सभी पुरुषों को सफेद कमीज और काली पतलून पहननी चाहिए। मुझे बताइए कि दुनिया कैसी दिखेगी? उबाऊ! वास्तव में यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमें विविधता से डरना नहीं चाहिए, बल्कि वस्तुनिष्ठतापूर्वक इसे स्वीकार करना चाहिए।

दर्द और आनन्द :

जब आप लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) शब्द के बारे में सोचते हैं, तो आपके दिमाग में कौन–कौन से शब्द आते हैं? प्रेम, इच्छा, यौनिक आनन्द, लैंगिक झुकाव, शर्म, पाबन्दी, दर्द, यौन हिंसा, बलात्कार, संकोच, नियम, मानक, सामाजिक प्रतिबन्ध आदि।

उपरोक्त वर्णन से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि लैंगिकता के सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों, पहलू हैं। हालाँकि सकारात्मक पहलुओं, जैसे–इच्छाओं और आनन्द पर शायद ही कभी बात की जाती हो। लैंगिकता के सम्बन्ध में अधिकांश बातें दर्द और हिंसा के सन्दर्भ में की जाती हैं। किन्तु इसके साथ–साथ लैंगिकता के सकारात्मक पहलुओं या आनन्दप्रदायी

हिस्से को स्वीकार करना भी महत्वूपर्ण है। **गायल रूबिन** लिखती हैं कि कुछ लोगों के लिए लैंगिकता एक गैर–महत्वपूर्ण विषय लग सकता है। वे इसे निर्धनता, युद्ध, बीमारी, प्रजातिवाद, अकाल या नाभिकीय विनाश जैसी अधिक विकट समस्याओं से ओछे किस्म का विचलन मान सकते हैं। लेकिन निश्चित रूप से ऐसे समय में, जिसमें कल्पनातीत विनाश की आशंका के साथ हम रह रहे हैं, लैंगिकता के बारे में लोगों के खतरनाक तरीके से विचलित हो जाने की आशंका है।

तरल और परिवर्तनीय

हमारे खान–पान की आदतों की तरह लैंगिकता भी तरल होती है और परिवर्तित हो सकती है। हालाँकि यह उतनी परिवर्तनीय नहीं हो सकती है, जितनी परिवर्तनीय हमारे खान–पान की आदतें होती हैं। यद्यपि नियमित आधार पर नहीं, किन्तु लैंगिकता से जुड़ी इच्छाएँ जिन्दगी में कभी–कभी बदल भी सकती हैं, जैसे–मुझे क्या पसन्द है, मैं किसे पसन्द करता/करती हूँ।

सामाजिक रूप से निर्मित

हमने पहले पढ़ा कि हम क्या खाते हैं, कैसे खाते हैं, कौन क्या खा सकता है और हम क्यों खाते हैं–ये सारी चीजें सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं। इसी प्रकार लैंगिकता के सन्दर्भ में भी मानक मौजूद हैं जो सिद्ध करते हैं कि लैंगिकता भी सामाजिक रूप से निर्मित की जाती है। इस तर्क पर विचार करते समय कि लैंगिकता सामाजिक रूप से निर्मित की जाती है, इसे समझना उपयोगी हो सकता है कि कौन, कैसे, कब, किसे और क्यों हम इच्छा करते हैं–ये सारी चीजें दृढ़तापूर्वक सामाजिक प्रभावों के अधीन होती हैं। लैंगिकता के इन समस्त आयामों के सम्बन्ध में भली प्रकार परिभाषित सामाजिक मानक मौजूद हैं।

निम्नलिखित परिच्छेद व्याख्यायित करते हैं कि लैंगिकता किस प्रकार सामाजिक रूप से निर्मित चीज होती है।

- किसके साथ : किसे इच्छा का अनुभव करना चाहिए, इस सन्दर्भ में एक बार फिर प्रजनन का तर्क प्रबल हो जाता है। ऐसे लोगों, को जो प्रजनन करने की उम्र सीमा से बाहर हैं, अक्सर या तो अलैंगिक (asexual) मान लिया जाता है या उनकी यौन इच्छाओं को अस्वीकार्य या अनुपयुक्त मान लिया जाता है। प्रजनन के इसी तर्क से वह दृष्टिकोण भी जुड़ा हुआ है, जो विकलांग जनों की यौन इच्छाओं की वैधता को नकार देता है (हिन्दी फिल्म मार्ग्रेट विद ए स्ट्रो में भली प्रकार प्रदर्शित)। इच्छा को अनुभव करने के बारे में यह भी माना जाता है कि उसका अनुभव एक पुरुष और एक स्त्री के बीच ही होना चाहिए, और अगर ये पुरुष और स्त्री एक ही जाति, एक ही वर्ग और एक ही धर्म के हों, तो और भी अच्छा माना जाता है। देश के कुछ भागों में अगर ये पुरुष और स्त्री अलग–अलग गोत्र (उप–जाति) के हों, तो इसे अच्छा माना जाता है।
- कब : विवाह के बाद। विवाह की संस्था के बाहर बनाए गए सम्बन्ध स्वीकार नहीं किए जाते तथा उन्हें आदर की निगाह से नहीं देखा जाता।
- कहाँ : शयनकक्ष (बेडरूम) के गोपनीयता के दायरे में।

सार्वजनिक अभद्रता के लिए होटल के कमरों से मुम्बई पुलिस ने 40 जोड़ों (युगलों) को गिरफ्तार किया। इस हद तक?

एक अत्यन्त विचित्र घटना में मुम्बई पुलिस ने मध आइलैण्ड और अक्सा इलाके में छापा मारा और उन जोड़ों को गिरफ्तार किया जो कथित रूप से 'सार्वजनिक अभद्रता' फैला रहे थे।

पुलिस होटल के कमरों में पहुँची और जोड़ों को कमरों से बाहर निकाल लायी। इस छापे में लगभग 40 जोड़े गिरफ्तार हुए हैं।

छापे का ब्यौरा :

– जो लोग गिरफ्तार किए गए हैं, उनसे उनके अभिभावकों को फोन कराया गया और दण्डस्वरूप 1200ध्– रुपये का जुर्माना भी लगाया गया। उनका निरादर किया गया और उन्होंने अपने मानवाधिकारों का उल्लंघन झेला। घटना दर्शाती है कि अपने नागरिकों की लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) पर राज्य किस प्रकार नियन्त्रण करने की कोशिश करता है।

http://www-storypick.com/mumbai-police

- **क्या :** यौन इच्छा को किस प्रकार महसूस या अभिव्यक्त करना चाहिए, इस सन्दर्भ में केवल उसी सेक्स को 'सामान्य' और आदरणीय समझा जाता है, जो दो अलग–अलग लिंग वाले लोगों के बीच घटित होता है क्योंकि यह मनुष्य की पसंतनोत्पत्ति से जुड़ा हुआ है। हालाँकि इस बात पर तर्क करना कठिन होगा कि 'केवल प्रजनन के लिए सेक्स' वाला विक्टोरियाई विचार अभी भी सत्य ही है, तो भी प्रजननमूलक तर्क अडिग बना हुआ है और इसे उच्च कोटि की वैधता प्राप्त है। असल में, अनेक सन्दर्भों में, 'सेक्स' शब्द को 'अलग–अलग लिंग के बीच होने वाले सेक्स' के साथ अदल–बदलकर प्रयोग किया जाता है। भारतीय सन्दर्भ में इसके अलावा अन्य प्रकार के सेक्सुअल कार्यों को लांछित करने की कोशिश की जाती है।

- **क्यों :** सेक्स की अनुमति क्यों दी जाती है, इसका सीधा–सा कारण है कि प्रजनन और सन्तान के लिए। आनन्द के लिए किए जाने वाले सेक्स को अय्याशी माना जाता है।

इस प्रकार ये कुछ ऐसे मानक हैं जो इस चीज को शासित करने का प्रयास करते हैं कि कौन, कैसे, कब और क्यों अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति करे। जिनके बारे में यह माना जाता है कि वे इन मानकों को तोड़ रहे हैं, उन्हें 'दण्डित' किया जाता है और उनके अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है। समलैंगिक पुरुषों को पुलिस द्वारा प्रताड़ित किया जाता है, यौन रूप से सक्रिय बुजुर्ग लोगों का उपहास उड़ाया जाता है, अल्पवय लोगों की लैंगिकता पर भारी पहरे लगाए जाते हैं, यौनिक अन्तर्क्रिया की शुरूआत करने वाली महिलाओं को फूहड़ बताया जाता है, समलैंगिक महिलाओं को विवाह करने के लिए बाध्य किया जाता है।

इन मानकों के आत्मसातीकरण के माध्यम से इन मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने की कोशिश की जाती है।

लैंगिकता से सम्बन्धित इन मानकों को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन समाजीकरण की प्रक्रियाएँ हैं, जो हमारे यौन व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को प्राकृतिक जैसी बना देती हैं। यद्यपि हमारी इच्छाएँ शायद इस चीज की सर्वाधिक आवेगपूर्ण और गहनतम अभिव्यक्ति के रूप में महसूस की जा सकती हैं कि 'वास्तव में हम हैं कौन', लैंगिकता की निर्मिति सामाजिक रूप से ही की जाती है।

भोजन और लैंगिकता में अन्तर :

जैसाकि आप देख चुके हैं कि भोजन और लैंगिकता में तमाम समानताएँ हैं। हालाँकि इनमें अन्तर भी है। एक आसान तरीका यह है कि हम भोजन में जितने अन्तरों की बात करते

हैं, उतने अन्तर लैंगिकता के मामले में सम्भव नहीं हैं। यदि किसी मनुष्य को तन्दूरी चिकन पसन्द नहीं है और आपको पसन्द है, तो सम्भव है कि इससे दो लोगों के बीच में बहुत अन्तर न पैदा हो। हालाँकि अगर किसी मनुष्य की यौन इच्छाएँ समाज द्वारा निर्धारित किए गए मानकों से अलग हैं तो उस मनुष्य को इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

आइए आगे पढ़ते हैं कि लैंगिकता कैसे जीवन का एक पहलू है।

2.5 लैंगिकता–जीवन का एक पहलू

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने लैंगिकता की एक विस्तृत परिभाषा दी है। हालाँकि इसे पुनःस्थापित करने की जरूरत है कि यह हमारे जीवन का केन्द्रीय पहलू है। यह हमारे जीवन की लगभग सभी पेचीदगियों में मौजूद होता है और उन पेचीदगियों को सुझाना महत्वपूर्ण है। हम आपके सामने जीवन के कुछ पहलू प्रस्तुत कर रहे हैं और आप देख सकते हैं कि किस प्रकार लैंगिकता इन सभी पहलुओं में उपस्थित है।

शिक्षा : पाँचवीं कक्षा के बाद बच्चियों का स्कूल छोड़ देना हमारे देश का एक बड़ा मुद्दा है। प्राइमरी के बाद वाले विद्यालय (माध्यमिक विद्यालय) गाँव से बहुत दूर स्थित होते हैं। शिक्षा के सन्दर्भ में हम इसे 'जेंडर' का एक मुद्दा कह सकते हैं। लेकिन क्या सचमुच यह 'जेंडर' का ही एक मुद्दा है? अगर आप स्कूल छोड़ने वाली इन बालिकाओं के माता–पिता से बात करेंगे तो वे आपको बताएँगे कि चूँकि विद्यालय गाँवों से बहुत दूर हैं, इसलिए उन्हें यह डर है कि विद्यालय आते–जाते समय रास्ते में उनकी बच्चियों के साथ 'कुछ' घटित न हो जाए। इस 'कुछ' से उनका तात्पर्य यौन हिंसा से होता है या इस बात से होता है कि कुछ लड़कियाँ अपनी लैंगिकता का उपभोग न करने लगें।

चलना–फिरना : महिलाओं को रात में बाहर जाने की अनुमति नहीं होती है। महिला छात्रावासों में अधिकांशतः लड़कियों को यह अनुमति नहीं दी जाती कि वे रात में बाहर जाएँ। कुछ विश्वविद्यालयों में उन्होंने 'पिंजड़ा तोड़' आन्दोलन प्रारम्भ किया है, जो छात्रवासों को पिंजड़ों यानी कैदखाने के रूप में देखता है। यह भी लैंगिकता से ही जुड़ा हुआ है क्योंकि प्राधिकारियों को डर है कि लड़कियों को यौन हिंसा का सामना न करना पड़ जाए! प्राधिकारी आपको बताएँगे कि वे लड़कियों को सुरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ सुरक्षा का ही मसला नहीं है। उन्हें यह डर है कि अगर लड़कियों को स्वतन्त्रता दे दी गई, तो वे सहमतिपूर्वक सम्बन्धों या सेक्स में संलग्न हो सकती हैं।

चिकित्सक द्वारा इलाज : शरीर के कुछ ऐसे अंग, जो प्रजनन और यौन स्वास्थ्य से सम्बन्धित हैं, उन्हें 'गुप्त अंग' कहा जाता है। लड़कियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे इन अंगों के सम्बन्ध में शर्म किया करें। इसलिए जब कभी इन अंगों के सम्बन्ध में स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई मुद्दा उठ खड़ा होता है, तो चिकित्सकों को ऐसे अंग दिखाते समय लड़कियाँ शर्माती हैं। आमतौर पर, ऐसे मुद्दे छिपे ही रह जाते हैं।

2.6 लैंगिक श्रेणीतन्त्र

मुख्यधारा के समाज में हम सम्बन्धों के बारे में कुछ मानकों को सीखते हैं।

- सम्बन्ध एक पुरुष और एक स्त्री के बीच होना चाहिए।
- सम्बन्ध विवाह की संस्था के दायरे के भीतर ही बनाया जाना चाहिए।
- सम्बन्ध ऐसे पुरुष और स्त्री के बीच होना चाहिए, जो एक ही जाति, एक ही धर्म और एक ही वर्ग के हों।

आप सोच रहे होंगे कि इन मानकों में गलती ही क्या है! यह समझना महत्वपूर्ण है कि जो लोग इन मानकों को स्वीकार नहीं करते, उन्हें उनके जीवन में दण्डित किया जाता है। उन्हें तरह–तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता है, समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता और कई बार उन्हें मृत्यु का भी सामना करना पड़ सकता है। निम्नलिखित घटना अध्ययन के लिए एक मामला (केस) हो सकती है।

बॉक्स संख्या 2.1

समलैंगिक जोड़े ने आत्महत्या की

मोनोतोष चक्रवर्ती । टाइम्स न्यूज नेटवर्क । जनवरी 24, 2011

दक्षिणी चौबीस परगना के एक गाँव में दो किशोर समलैंगिक लड़कियों ने आत्महत्या कर ली। आत्महत्या का सम्भावित कारण शायद यह है कि वे समलैंगिक होने की वजह से अपने भविष्य को लेकर चिन्तित थीं। पुलिस ने उन्नीस वर्षीय बॉबी साहा और सत्रह वर्षीय पूजा मण्डल के शव बोरल के त्रिपुरा सुन्दरी इलाके में स्थित बॉबी के घर से दरवाजा तोड़ने के बाद बरामद किए हैं। पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट बताती है कि इन दोनों लड़कियों ने साथ–साथ जहर खाया और एक दूसरे की बाँहों में मरने के लिए हाथ पकड़कर लेट गयीं। पुलिस ने कहा, "ऐसा लगता है कि दोनों लड़कियों के बीच (शारीरिक) सम्बन्ध थे लेकिन अपने भविष्य की अनिश्चितता को लेकर वे अवसादग्रस्त थीं, और इसीलिए इन लड़कियों ने आत्महत्या कर ली।" बताया जाता है कि इन लड़कियों के "असामान्य व्यवहार" के कारण पड़ोसियों से आलोचना झेलने के बावजूद इनके के परिवारों में नजदीकी आपसी सम्बन्ध था। "बॉबी पुरुषों की तरह कपड़े पहनती थी और पुरुषों की तरह ही व्यवहार करती थी, जबकि पूजा किसी आम लड़की की तरह थी।"

http://timesofindia-indiatimes-com/city/kolkata/Lesbian&couple&commits&suicide/articleshow/7351197-cms

इस प्रकार उपरोक्त घटना दर्शाती है कि समाज पुरुष और स्त्री के बीच के सम्बन्धों को छोड़कर किसी अन्य प्रकार के सम्बन्ध का अनुमोदन नहीं करता। पहले के अनुच्छेद में हमने देखा है कि अगर पुरुष और स्त्री अपनी जातियों से बाहर जाकर विवाह करते हैं, तो उन्हें परिवार और समाज द्वारा किस प्रकार गम्भीर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।

गायल रूबिन दो संकल्पनामूलक संकेन्द्रित वृत्तों को लेते हुए 'मन्त्रमुग्ध करने वाले वृत्तों (चार्म्ड वृत्तों)' की बात करती हैं। ये वृत्त यौन कार्यों के व्यवहार के स्वीकरण और कम स्वीकरण को प्रतिबिम्बित करते हैं। आन्तरिक वृत्त ऐसे यौन कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें स्वीकार्यता और विशेषाधिकार प्राप्त है, जबकि "बाहरी सीमाएँ (वृत्त)" ऐसे यौन कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो अस्वीकार्य हैं, जिन्हें असामान्य के रूप में देखा जाता है और जिन्हें अक्सर दण्डित किया जाता है। लेकिन इन दोनों वृत्तों के बीच की सीमा रेखाएँ भेद्य हैं और एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में जाने पर, एक बाजार से दूसरे बाजार में जाने पर, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने पर ये सीमा रेखाएँ परिवर्तित होती रहती हैं।

किन्तु कोई विचलन निश्चित दायरों के भीतर ही स्वीकार्य है, जैसे – समलैंगिकता स्वीकार्य है अगर यह 'आन्तरिक वृत्त' की सीमाओं में घटित हो। इसका तात्पर्य यह है कि इस समलैंगिकता को एकनिष्ठ होना चाहिए, इसे घर के भीतर होना चाहिए, इसे विवाह की संस्था के भीतर होना चाहिए, इसे समान पीढ़ी वाले लोगों के बीच ही घटित होना चाहिए, आदि।

जो लोग इन 'चार्म्ड वृत्त' के दायरे में रहते हैं, उन्हें विशेषाधिकार हासिल होते हैं और उन्हें भौतिक वास्तविकताओं के रूप में लाभ प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक लड़की की शादी उसकी अपनी जाति और धर्म के किसी लड़के से होती है, तो उसे समुदाय में आदर मिलेगा। यह भी होता है कि जिन लोगों के विवाह सामाजिक मानकों के अनुरूप हुए होते हैं, उन्हें भौतिक लाभ भी होता है। उदाहरण के लिए, अगर मैं शादीशुदा हूँ तो मैं जीवन बीमा के कागजात में अपने पति को नामांकित कर सकती हूँ, या मैं अपने पति के साथ मिलकर एक बच्चा गोद ले सकती हूँ, या मैं अपने पति के साथ मिलकर एक कर्ज ले सकती हूँ, या मैं अपने पति के साथ मिलकर एक घर खरीद सकती हूँ। अगर मैं एक समलैंगिक स्त्री (लेस्बियन) होती, तो अपने साथी के साथ मिलकर भारत में मैं एक घर नहीं खरीद सकती थी या अपने जीवन बीमा में अपने साथी को मैं नामांकित नहीं कर सकती थी। लेकिन एक सन्दर्भ से दूसरे सन्दर्भ में जाने पर ये चीजें बदलती हैं। कुछ ऐसे देशों में, जहाँ समलैंगिक विवाह कानूनसम्मत है, वहाँ ऐसे युगल मौजूद हैं जो एक दूसरे को नामांकित कर सकते हैं। हाँ, इतना जरूर है कि इसके लिए उन्हें चार्म्ड वृत्त में होना चाहिए, न कि बाहरी वृत्त में।

लैंगिक श्रेणीतन्त्र पर वापस आते हुए, यह स्पष्ट है कि इस श्रेणीतन्त्र और पितृसत्ता के बीच एक बुनियादी सम्बन्ध है। चार्म्ड वृत्त के हृदयस्थल पर विषमलिंगी और एकनिष्ठ लोग स्थित होते हैं। केवल इसी इकाई में पितृसत्ता द्वारा हासिल किए गए श्रम, संसाधन और शक्ति के विभाजन सम्भव होते हैं। यह उस दण्ड की गम्भीरता की भी व्याख्या करता है जो समाज की व्यवस्था बनाए रखने वाले लैंगिक श्रेणीतन्त्र का उल्लंघन करने वाले लोगों को दिए जाते हैं। युवा महिलाओं के युगल द्वारा की गई आत्महत्या की घटना (बॉक्स संख्या 2.1) इसी प्रकार के दण्ड का एक उदाहरण है।

आपने पिछले कुछ हिस्सों में जो कुछ सीखा है, उसके मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित अभ्यास कीजिए–

प्रगति परीश्रम अभ्यास

1) लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) लैंगिक श्रेणीतन्त्र क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

निम्नलिखित हिस्से में समान यौन इच्छाओं के बारे में पढ़िए–

2.7 समान यौन इच्छाएँ

समान लिंग वाले सम्बन्ध ऐसे सम्बन्ध हैं जिसके अन्तर्गत पुरुष और महिला अपने ही लिंग के लोगों के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक महिला दूसरी महिला की तरफ आकर्षित होती है, या एक पुरुष किसी दूसरे पुरुष की तरफ आकर्षित होता है, तो इसे हम समान यौन इच्छा कह सकते हैं। ऐसे सम्बन्धों को समलैंगिक सम्बन्ध भी कहा जाता है। इस प्रकार की इच्छाओं को समाज द्वारा 'असामान्य' माना जाता है। अपने ही समान लिंग वाले किसी व्यक्ति की इच्छा रखने वाले लोगों को मानवाधिकारों के जिन उल्लंघनों (हिंसा) का सामना करना पड़ता है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

- **मौन :** ऐसे मुद्दों के बारे में मौन व्याप्त रहता है। कोई व्यक्ति अपनी ऐसी इच्छाओं के बारे में अपने सबसे करीबी दोस्तों से भी बातचीत नहीं कर सकता क्योंकि लोगों में मान्यता यही है कि यौन सम्बन्ध अलग–अलग लिंग वाले लोगों के बीच ही बनाए जाते हैं।

- **पारिवारिक हिंसा :** समलैंगिकता को लेकर हिंसा की शुरूआत घरों से होती है। जब माता–पिता को ऐसी इच्छाओं के बारे में पता चलता है तो परिवार के लोग दबाव डालना शुरू करते हैं कि वे मानकों के हिसाब से रहें। अपने लिंग के लोगों के साथ सम्बन्ध की इच्छा रखने वाले कुछ लोगों ने अपने माता–पिता द्वारा की जाने वाली शारीरिक और मानसिक हिंसा की जानकारी दी है। कुछ जगहों पर परिवार के लोगों द्वारा किए जाने वाले 'सुधारात्मक बलात्कार' की घटनाएँ सामने आई हैं।

- **शैक्षिक संस्थाएँ :** पाठ्य पुस्तकों में ऐसे सम्बन्धों का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। मित्र भी जब किसी दूसरे की इस प्रकार की यौनिकता के बारे में जानते हैं, तो वे भी ऐसे लोगों का उपहास उड़ाते हैं।

- **कार्यस्थल :** कार्यस्थल पर अपने ही लिंग वाले साथी (पार्टनर) को परिवार की तरह प्रस्तुत करना मुश्किल है।

समान यौन इच्छाओं को असामान्य कहे जाने के पीछे एकमात्र कारण यह है कि ये बहुत हद तक पितृसत्ता को चुनौती देती हैं। एक ऐसे परिवार के बारे में सोचिए, जहाँ दो महिलाएँ जीवनसाथी के रूप में रहती हों। उन महिलाओं में से कौन घर से बाहर जाकर काम करेगी, या फिर उनमें से कौन घरेलू कामकाज की देखरेख करेगी। या तो दोनों महिलाएँ दोनों तरीके के कामों को सँभालेंगी या उनमें से कोई एक विशेष कार्य करेगी। और चूँकि उन दोनों में से प्रत्येक एक महिला ही है, इसलिए शक्ति उस तरह असमान नहीं है, जिस तरह एक महिला और एक पुरुष के बीच सम्बन्ध के मामले में होती है। समान यौन इच्छाएँ प्रजननमूलक तर्क के दायरे से भी बाहर हैं। उनके बीच यौन सम्बन्ध सन्तानोत्पत्ति या वंशवृद्धि के लिए नहीं स्थापित होते। इसलिए ऐसे सम्बन्धों को समाज द्वारा लांछित किया जाता है।

2.8 अच्छी महिलाएँ : लैंगिकता के साथ सम्बन्ध

सामाजिक मानकों के अनुसार दो तरीके की महिलाएँ होती हैं–अच्छी महिलाएँ और खराब महिलाएँ। आमतौर पर यह उम्मीद की जाती है कि एक महिला एक अच्छी पुत्री होगी, एक

अच्छी पत्नी होगी, एक अच्छी माँ होगी, एक अच्छी बहन होगी आदि। 'अच्छे' और 'खराब' की परिभाषा क्या है? क्यों हर महिला 'खराब महिला' होने से भयभीत रहती है?

एक 'अच्छी महिला' क्या करती है? वह समाज के समस्त मानकों का पालन करती है। वह उन्हीं वस्त्रों को पहनती है, जिन्हें समाज द्वारा 'उपयुक्त' माना जाता हैय वह सभी लोगों के भोजन कराने के बाद भोजन करती हैय वह हर किसी की बात सुनती हैय वह अपनी चिन्ता किए बिना सभी लोगों की देखभाल करती है। जब भी उसके पति की इच्छा हो, तब वह उसके साथ यौन सम्बन्ध बनाती है। सम्बन्धों या सेक्स के सन्दर्भ में वह अपनी तरफ से कभी भी पहल नहीं करेगी। दूसरी तरफ सामाजिक मानकों के अनुसार एक 'खराब महिला' वह है जो अपनी पसन्द के काम करे, जो अपनी पसन्द के कपड़े पहने, जो भूख लगने पर खा लिया करे। इसलिए कहना चाहिए कि उसे ऐसा हर कार्य करने की स्वतन्त्रता है, जिसमें, किसी दूसरे की स्वतन्त्रता का हनन किए बिना, उसे प्रसन्नता मिलती हो। आमतौर पर यह मान लिया जाता है कि चूँकि 'खराब महिला' ऐसे कार्य करती है, जिसमें उसे प्रसन्नता मिलती हो, इसलिए वह गैर–जिम्मेदार (लापरवाह) हो सकती है। हालाँकि अपनी पसन्द के कार्य करने के कारण कोई महिला गैर–जिम्मेदार नहीं हो जाती। अच्छी महिलाओं के मानक लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, एक 'अच्छी महिला' अपने पति को सेक्स के लिए कभी भी 'न' नहीं कहेगी, वह किसी अन्य पुरुष से बातचीत नहीं करेगी, वह उन्हीं कपड़ों को पहनेगी, जिनके बारे में समाज जोर देता है कि यही कपड़े पहनने चाहिए। इसलिए ये मानक लैंगिकता से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं।

2.9 यौन सुख और सशक्तीकरण

इस बात के जटिल कारण हैं कि क्यों नारीवादियों समेत अनेक महिलाएँ लैंगिकता को लेकर उत्सुक होने की तरफ आगे बढ़ी हैं। **कैरोल वांस** ने इनमें से अनेक कारणों को शक्तिशाली तरीके से पहचाना और गिनाया है।

महिलाएँ अपनी माताओं द्वारा इस बात के लिए समाजीकृत कर दी जाती हैं कि वे अपने कपड़ों को बहुत साधारण रखें, अपनी पैंट ऊपर करके पहनें और अपने शरीर को अजनबियों से दूर रखें। ऐसी महिलाएँ जब अपने यौन आवेगों के अनुभव हासिल करती हैं, तो उसे खतरनाक माना जाता है। इसके कारण उन्हें सुरक्षित दायरे से बाहर कार्य करने वाली महिला मान लिया जाता है। महिलाओं की लैंगिकता को बाह्य नियन्त्रण और समाजीकरण की आन्तरिक प्रक्रियाएँ किस तरह साथ–साथ प्रभावित करती हैं, इस विषय पर आगे बढ़ते हुए डॉ. वांस लिखती हैं कि जेंडर असमानता के भीषण परिणामों में न सिर्फ पाशविक हिंसा शामिल हो सकती है, बल्कि महिलाओं के आवेगों का आत्मसातीकृत नियन्त्रण, आत्मसंशय और चिन्ता के साथ इच्छा को शुरू होते ही मार देना भी शामिल हो सकते हैं।

बॉक्स सं. 2.2

"…. जेंडर एवं लैंगिकता पर निरन्तर ट्रस्ट द्वारा ग्रामीण राजस्थान (भारत का एक पश्चिमी राज्य) में अनौपचारिक अध्यापकों के साथ की गई एक कार्यशाला में एक वृत्तचित्र के एक दृश्य में एक परिचर्चा की गई थी। इस परिचर्चा में युवा लड़कों का एक समूह लड़कियों के साथ अपने यौन अनुभवों को लेकर आपस में बातचीत करता है। उनमें से एक लड़का लड़कियों की प्रतिक्रिया पर टिप्पणी करता है और यह कहता

है कि अगर लड़कियाँ 'न' भी कहती हैं, तो भी उनका असल तात्पर्य 'हाँ' ही होता है। यह एक ऐसी टिप्पणी थी, जो कार्यशाला में पुरुष अध्यापकों से सशक्त तरीके से मेल खाती थी। हालाँकि महिला अध्यापकों में से एक ने कहा कि अगर अपनी तरफ रुख करने वाले किसी पुरुष को कोई महिला 'न' कहती है, तो पुरुषों के लिए उसे यह कहकर खारिज कर देना आम बात है कि "अगर एक महिला 'न' भी कहती है, तो उसका असल तात्पर्य 'हाँ' ही होता है।" और अगर कोई महिला उस पुरुष को 'हाँ' कह देती है, जो उसमें रुचि दिखा रहा है, तो तुरन्त उस महिला को ढीले–ढाले चरित्र का करार दे दिया जाएगा। महिलाओं के पास 'हाँ' कहने का रास्ता ही नहीं है, चाहे वे 'हाँ' कहना ही क्यों न चाहती हों। इस वजह से पुरुषों के लिए यह रास्ता खुल जाता है कि जब महिलाएँ 'न' कहें, तो वे महिलाओं को झिड़क दें (और उस 'न' को 'हाँ' मान लें)। परिचर्चा का निष्कर्ष इस सीख के रूप में निकला कि महिलाओं को 'न' कहने का अधिकार केवल तभी मिलेगा, जब उन्हें 'हाँ' कहने का अधिकार मिल जाए। लैंगिकता और सशक्तीकरण के बीच के एक महत्वपूर्ण जुड़ाव का सम्बन्ध, महिलाओं द्वारा अपनी यौन इच्छाओं को अभिव्यक्त करने और अवांछित यौनिक ध्यानाकर्षणों को 'न' कहने के रूप में, महिलाओं की शारीरिक अखण्डता से है।"

स्रोत : लेखक द्वारा अपनी तरफ से

अन्ततः हम कह सकते हैं कि लैंगिक (सेक्सुअल) सशक्तीकरण :

- किसी व्यक्ति द्वारा अपनी स्वयं की खुशी के बारे में सोचने की योग्यता है, यौन इच्छाओं के महत्व की पहचान करना और उन्हें अभिव्यक्त करने के योग्य होना है,
- इस सन्दर्भ में लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) की भूमिका को समझना है कि महिलाओं का दमन क्यों और किस प्रकार होता है,
- अधिकारों को हासिल करने के लिए लैंगिकता से सम्बन्धित बाधाओं की पहचान करना और उनसे निपटने का प्रयास करना है,
- एक दूसरे की तरफ की जाने वाली निर्णयमूलक अभिवृत्तियों (Judgemental Attitudes) पर सवाल उठाना और इस प्रकार समुदायों को सशक्त बनाना है।

2.10 सारांश

इस इकाई में आपने सीखा कि लैंगिकता (Sexuality) का तात्पर्य क्या है और सेक्स से यह किस प्रकार भिन्न है। लैंगिकता सामाजिक रूप से भी निर्मित की जाती है, श्रेणीतन्त्रीय प्रकृति की होती है और पितृसत्ता द्वारा नियन्त्रित की जाती है। यह भी, कि एक पुरुष और एक स्त्री के बीच के यौन सम्बन्धों को छोड़कर बाकी सभी प्रकार के यौन सम्बन्ध समाज द्वारा स्वीकृत नहीं किए जाते हैं। इकाई का समापन लैंगिक सशक्तीकरण पर एक परिचर्चा से होता है।

2.11 सन्दर्भ

1) Khulti Partein, Vol 1 and 2, *Yaunikta aur Hum*, *Nirantar Trust*, New Delhi

2) Rubin S, Gayle. 2011. Deviations. Duke University press. ISBN-0822349868. 9780822349860

3) Sharma Jaya, Bringing Together Pleasure and Politics: Sexuality Workshops in Rural India, Nirantar, Centre for Gender and Education, Institute of Development Studies Practice Paper, UK

4) Vance, Carole S. 1984. *"Pleasure and Danger: Toward a Politics of Sexuality."* In Pleasure and Danger: Exploring Female Sexuality, edited by Carole S. Vance. Boston: Routledge & Kegan Paul

5) http://timesofindia.indiatimes.com/city/madurai/Inter-caste-marriage-behind-murder-of-youth-in-Karur/articleshow/51578329.cms

6) http://timesofindia.indiatimes.com/city/kolkata/Lesbian-couple-commits-suicide/articleshow/7351197.cms

2.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) को परिभाषित कीजिए।

2) व्याख्या कीजिए कि लैंगिकता किस प्रकार सामाजिक रूप से निर्मित की जाती है।

3) अच्छी और खराब महिलाओं के बीच समाज किस प्रकार अन्तर करता है?

4) लैंगिक सशक्तीकरण क्या है?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 पुरुषत्व (Masculinities)

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) की चर्चा क्यों?

3.4 पुरुषत्व की परिभाषा

3.5 पुरुषत्व को समझना

3.6 पुरुषत्व की निर्मिति (रचना)

3.7 पुरुषत्त्व के विभिन्न रूप

3.8 पितृसत्ता और पुरुषत्व

3.9 पुरुषत्व और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा

3.10 लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) और पुरुषत्व

3.11 मीडिया की भूमिका

3.12 निष्कर्ष

3.13 सन्दर्भ

3.14 अभ्यास के लिए प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

समाज तथा अकादमिक जगत, दोनों क्षेत्रों में, प्रारम्भ में महिलाओं के आन्दोलन महिलाओं के नेताओं के रूप में तथा संघर्ष के परिणामों को प्राप्त करने वालों के रूप में उभरने के साथ शुरू हुए। परिवर्तन की दर धीमी पायी गई और यह सिक्के के महज एक ही पहलू को देखने जैसा था। यह महसूस किया गया कि महिलाओं के सशक्तीकरण की प्रक्रिया में पुरुषों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए पुरुषत्व को तथा पुरुषों और महिलाओं पर इसके प्रभावों को समझना अनिवार्य है ताकि समाज में जेंडरीकृत सामाजिक अभिवृत्ति और उम्मीदों में परिवर्तन लाया जा सके।

इस इकाई की शुरूआत हम इस विषय पर परिचर्चा से करेंगे कि जेंडर संवेदीकरण के पाठ्यक्रम में पुरुषत्व (Masculinity) और पुरुषत्वों (Masculinities) पर बात करना क्यों जरूरी है, पुरुष और महिला इन संकल्पनाओं से किस प्रकार प्रभावित होते हैं। इसके बाद आप पढ़ेंगे कि पुरुषत्व को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है, इसके रूप क्या–क्या हैं, इसकी रचना कैसे होती है, पितृसत्ता, हिंसा और लैंगिकता से इसका क्या सम्बन्ध है। इकाई का अन्तिम हिस्सा पुरुषत्व की रचना में मीडिया की भूमिका पर केन्द्रित है तथा इसके बाद निष्कर्ष आता है। आइए अब इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्यों पर निगाह डालें।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जाएँगे कि आप :

- पुरुषत्व की रचना को परिभाषित और व्याख्यायित कर सकेंगे/सकेंगी;
- पुरुषत्व, पितृसत्ता, हिंसा और लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) के बीच सम्बन्ध का वर्णन कर सकेंगे/सकेंगी; और
- पुरुषत्व के रूपों पर तथा विभिन्न समाजों में पुरुषों एवं महिलाओं पर उसके प्रभावों पर चर्चा कर सकेंगे/सकेंगी।

3.3 पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) की चर्चा क्यों?

लड़के और पुरुष जिस समाज में रहते हैं या अपना कार्य करते हैं, उस समाज की पुरुषत्वमूलक (मैस्कुलिन) अपेक्षाओं (उम्मीदों) के अनुरूप उपयुक्त जेंडर भूमिकाओं और व्यवहारों को सीखते हैं। लड़के अपने बचपन से ही इस बारे में सन्देश पाने लगते हैं कि एक "लड़का" होने का मतलब क्या है। लड़कों और लड़कियों को खेलने के लिए जो खिलौने दिए जाते हैं, उन्हें देखकर आप समझ सकते हैं कि जेंडरीकरण (Gendering) किस प्रकार घटित होता है। उन खेलों को भी गौर से देखिए जो छोटे लड़के और लड़कियाँ खेलते हैं, देखिए कि उनमें से प्रत्येक किस भूमिका को हाथ में लेता है। आप पाएँगे/पाएंगी कि यह उनकी जेंडर भूमिकाओं का स्वाभाविक विस्तार है, जिसे वे परिवार में और परिवार के बाहर समाज में घटित होते देखते हैं।

आइए उस चीज पर एक निगाह डालें, जो कमला भसीन कहना चाहती हैं :

- जेंडर मुद्दे ऐसे मुद्दे नहीं हैं, जो केवल महिलाओं से ही सम्बन्धित हों। स्त्रीत्व का अस्तित्व पुरुषत्व से अलग होकर अकेले में नहीं होता। महिलाएँ अधीनस्थ होती हैं क्योंकि पुरुष महिलाओं पर हावी होने योग्य हैं।
- पुरुष और लड़के उस स्टीरियोटाइपिंग का शिकार होते हैं, जो पितृसत्तात्मक संस्कृति से उपजती है। यह संस्कृति उन्हें न सिर्फ महिलाओं का, बल्कि पूरे परिवार का संरक्षक और अन्नदाता बनाती है। इस पितृसत्तात्मक उम्मीद पर सवाल उठाना जरूरी है। इसे इस सन्दर्भ में समझना आवश्यक है कि किसी समाज में पुरुषत्व की रचना किस प्रकार की जाती है।
- पुरुष भी ऐसे श्रेणीतन्त्रीय शक्ति सम्बन्धों के अधीन होते हैं, जिन्हें एक खास किस्म के पुरुषत्व द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण के लिए, सौम्य लड़कों और पुरुषों का शक्तिशाली और मर्दाना किस्म के पुरुषों/लड़कों द्वारा यौन शोषण किया जाता है।
- जेंडर मुद्दों को समझना और सम्बोधित करना पुरुषों के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे न सिर्फ महिलाओं को, बल्कि पुरुषों को भी प्रभावित करते हैं।
- समकालीन दौर में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों ने जेंडर भूमिकाओं और सम्बन्धों में बदलावों को बढ़ावा दिया है। इसने स्टीरियोटाइपमूलक पितृसत्तात्मक धारणाओं की चूलें हिला दी हैं, जिसे स्वीकार करना पुरुषों के लिए मुश्किल होता है। खासतौर से, शिक्षा और रोजगार में पुरुषों के वर्चस्व, उनकी शक्ति और विशेषाधिकारों के क्षरण ने मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याओं को बढ़ावा दिया है। इन समस्याओं की वजह से निराशा और आक्रोश बढ़ा है, जिसके कारण महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और हिंसक अपराध बढ़े हैं, नशाखोरी और मद्यपान की घटनाएँ बढ़ी हैं।
- पुरुषों के सक्रिय समर्थन के बिना समानता, विकास और शान्ति की महिलाओं की माँग को पूरा नहीं किया जा सकता। इससे पुरुषों को भी उन पितृसत्तात्मक बेड़ियों से मुक्ति मिलेगी, जिन्होंने उनकी भलाई को अवरुद्ध कर रखा है।

- महिलाओं के विरुद्ध पुरुषों द्वारा की जाने वाली हिंसा को समझने के लिए पुरुषत्व की रचनाओं (निर्मितियों) को समझना अनिवार्य है।

भसीन (2004, पृष्ठ 2–5)

अतः अब आप देख सकते हैं कि समाज में महिलाएँ और लड़कियाँ जैसा जेंडर भेदभाव झेलती हैं, उसे समझने के लिए पुरुषत्व और उसके प्रकारों पर चर्चा करना क्यों आवश्यक है। यह भी, कि पुरुषत्व के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक विचाररेखाओं को परिवर्तित करके तथा स्त्रीत्व की धारणा में भी बदलाव लाकर हम एक ऐसे समाज की तरफ अग्रसर हो सकते हैं, जो जेंडर के दृष्टिकोण से अधिक न्यायपूर्ण और संवेदनशील हो। आइए अब पढ़ते हैं कि पुरुषत्व को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है।

3.4 पुरुषत्व (Masculinity) की परिभाषा

पुरुषत्व (Masculinity) शब्द 'पौरुष (Masculine) का संज्ञा रूप है, जिसका तात्पर्य पारम्परिक रूप से पुरुषों से सम्बद्ध गुणों और दिखावट (appearance), खासतौर पर ताकत और आक्रामकता, को धारण करने से है। दूसरे शब्दों में, पुरुषत्व प्राथमिक रूप से ऐसी विशेषताओं और गुणों से सम्बद्ध है, जिन्हें सामाजिक रूप से परिभाषित और निर्मित किया जाता है। इस प्रकार किसी दिए गए समाज या संस्कृति में, पुरुषत्व पुरुषों और लड़कों के अभिलक्षणों को दी गई सामाजिक परिभाषा है। जेंडर की ही तरह पुरुषत्व भी एक **'सामाजिक निर्मिति'** है। यानी यह समाज ही है जो निर्धारित करता है कि पुरुषों और लड़कों को किस तरह के कपड़े पहनने चाहिए, किस तरह व्यवहार करना चाहिए, किस तरह कार्य करना चाहिएय उनके पास कौन–कौन सी अभिवृत्ति (attitude) और गुण होने चाहिए तथा उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। अतः पुरुषत्व पुरुषों की तरफ से की जाने वाली सामाजिक–आर्थिक उम्मीदों (अपेक्षाओं) का एक ऐसा समुच्चय है, जो आज्ञा देता है कि उन्हें कैसा दिखना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए, कैसे कमाना चाहिए आदि।

किसी विशेष समाज से किसी दूसरे समाज में जाने पर पुरुषत्व में अन्तर आ जाता है। उदाहरण के लिए, इंग्लैण्ड में एक पुरुष से अपने पुरुषत्व को व्यक्त करने की जैसी उम्मीद की जाती है, वह उस उम्मीद से अलग हो सकती है, जिस तरीके की उम्मीद किसी पुरुष से अपने पुरुषत्व को व्यक्त करने के लिए मिस्र या भारत में की जाती है। इस प्रकार, समय और भूगोल के सन्दर्भ में, पुरुषत्व स्थैतिक (static) भी नहीं होता । और चूँकि अपनी जाति, वर्ग, नृजातीयता, प्रजाति और यहाँ तक कि यौन झुकावों में भी सभी पुरुष एक जैसे नहीं होते, अतः पुरुषत्व एक अखण्ड निर्मिति (monolithic construct) नहीं हो सकता। इसीलिए इसे 'पुरुषत्वों (masculinities)' के रूप में सन्दर्भित करना पड़ता है।

> पुरुषत्व हमेशा स्थानीय होता है और परिवर्तन के अधीन होता है। जो चीज परिवर्तित नहीं होती, वह है पुरुष की शक्ति या पुरुष प्रधान विचारधारा का औचित्य बताना और उसे स्वाभाविक मानकर स्वीकार करते चले जाना।
>
> आर्थर ब्रिट्टैन (कमला भसीन, 2004, में पृष्ठ 9 पर उद्धृत)

आइए अब पुरुषत्व से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं तथा पुरुषत्व के विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ें।

3.5 पुरुषत्व को समझना

पुरुषत्व की विपरीत निर्मिति यानी स्त्रीत्व पर निगाह डाले बिना पुरुषत्व को नहीं समझा जा सकता। हम कह सकते हैं कि 'एक महिला/लड़की वह है' जो 'एक पुरुष/लड़का नहीं है' और हम इसका उल्टा भी कह सकते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि पुरुषवाचक विशेषताएँ और गुण, स्त्रीवाचक विशेषताओं और गुणों के विपरीत रूप होते हैं। जैसाकि आपने उपरोक्त हिस्से में पढ़ा है कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व, दोनों का निर्धारण जीव–वैज्ञानिक रूप से नहीं होता, बल्कि ये सामाजिक निर्मितियाँ हैं। इस प्रकार जेंडर पहचानें सामाजिक–आर्थिक रूप से निर्धारित की जाती हैं। आइए, सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक विशेषताओं में से कुछ पर निगाह डालें :–

पुरुषवाचक	स्त्रीवाचक
तार्किक	भावुक
मजबूत	कमजोर
फुर्तीला (स्मार्ट)	सुन्दर
उदासीन/रूखा	देखरेख करने वाली
आक्रामक	पोषण करने वाली
साहसी	संकोची
हिंसक	दयालु
रोबदार/घमण्डी	सहनशील
स्वतन्त्र	निर्भर

जब हम उपरोक्त पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक विशेषताओं को सामाजिक सम्बन्ध के दायरे में ले जाते हैं तो हम पाते हैं कि अगर एक पुरुष से आक्रामक, नियन्त्रणकर्ता और गर्ममिजाज होने की उम्मीद की जाती है, तो वहीं एक स्त्री से उम्मीद की जाती है कि वह विनम्र, कोमल, धैर्यवान और सीधी हो। इस प्रकार आप देखते हैं कि विशेषताओं के एक समुच्चय को कारगर होने के लिए यह जरूरी होगा कि विशेषताओं का दूसरा समुच्चय उन्हें स्वीकार करे। यानी अगर कोई व्यक्ति शासन करता है, तो किसी ऐसे व्यक्ति का होना आवश्यक है जिस पर शासन किया जाएय और अगर एक श्रेष्ठ है, तो दूसरे को घटिया होना ही चाहिए।

क्या होगा अगर इन पुरुषवाचक और स्त्रीवाचक रूढ़ प्रारूपों (Stereotypes) की यथास्थिति का अनुसरण न किया जाए? उदाहरण के लिए, अगर कोई लड़की गैर–मानकीय व्यवहार करे, तो उसे अधीन बनाने के लिए समाज द्वारा उसके साथ बहुत क्रूर बर्ताव किया जा सकता है। यहाँ तक कि उसके साथ हिंसा के चरम रूप जैसे बलात्कार या हत्या तक का बर्ताव किया जा सकता है। मान लीजिए कि अगर किसी लड़के की रोने की प्रवृत्ति है या वह सौम्य है तो उसे 'कायर' या 'स्त्रैण' कहा जाता है और अगर कोई लड़की आक्रामक या प्रभावशाली है तो उसे अपमानजनक तरीके से 'मर्दाना' करार दिया जाता है।

बॉक्स सं. 3.1

पुरुषत्वों (masculinities) को समझने और उसे चुनौती देने का बुनियादी अर्थ हमारे समाज में श्रेणीतन्त्रीय शक्ति सम्बन्धों और व्यवस्थाओं पर विचार करना और उन पर सवाल उठाना है।

पुरुषों और महिलाओं के बीच के अन्तर प्रकृति के कारण होते हैं या शिक्षा और पालन–पोषण के कारण होते हैं या दोनों कारणों से होते हैं, इसे लेकर विशेषज्ञों में मतभिन्नता है।

बिल्कुल प्रारम्भिक अवस्था से ही बच्चे ऐसे सन्देश या संकेत प्राप्त करने लगते हैं, जो उनके व्यक्तित्व को लड़कों और लड़कियों के रूप में ढालते हैं। इसके अलावा जेंडरीकरण (Gendering) के एजेण्ट कहे जाने वाले बाहरी स्रोत भी होते हैं जो उन आदर्शों या मानकीय व्यवहारों या भूमिकाओं को उपलब्ध कराते हैं, जिनकी किसी दिए गए समाज में प्रत्येक सदस्य से उम्मीद की जाती है। समाज में परिवार और मित्र, विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसी शैक्षणिक संस्थाएँ, मीडिया, धर्म और अन्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ–ये सभी जेंडरीकरण के एजेण्ट हैं। ये क्रमशः अपनी संस्कृति और समाज में पुरुषों और लड़कों के लिए पुरुषत्व की निर्मितियों को आकार प्रदान करते रहते हैं। किसी दी गई स्थिति या घटना के सन्दर्भ में समाज लड़कों/लड़कियों से अलग–अलग अभिवृत्तियों और व्यावहारिक प्रतिक्रियाओं की उम्मीद करता है, जिससे जेंडरीकृत समाजीकरण को बढ़ावा मिलता है।

बॉक्स सं. 3.2

जेंडरीकृत समाजीकरण की व्याख्या लड़कों और लड़कियों के लिए उस वरीयता के रूप में की जा सकती है, जो उन्हें अलग–अलग तरीके से समाजीकृत करती है। लड़कों को पुरुषों की जेंडर भूमिकाओं और अपेक्षाओं का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा लड़कियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे स्त्रियों की ऐसी भूमिकाओं, व्यवहारों और कार्यों के अनुरूप रहें जो महिलाओं के लिए उपयुक्त होते हैं।

परिवार, आमतौर पर, बच्चों को जेंडरीकृत तरीके से समाजीकृत करता है। परिवार बिना चेतन रूप से सोचे हुए और सांस्कृतिक रूप से अपेक्षित परिणामों के अनुसरण में ऐसा करता है। उदाहरण के लिए, अधिकांश भारतीय घरों में लड़कों को बताया जाता है कि वे रोया न करें क्योंकि यह काम तो लड़कियों का है। लड़के अगर किसी गुड़िया के साथ खेलना चाहें या अपने माथे पर एक 'बिन्दी' लगा लें या अपनी माँ अथवा बहन की तरह चूड़ी पहन लें, तो उनका उपहास उड़ाया जाता है। यहाँ तक कि जीवन के बिल्कुल प्रारम्भिक वर्षों से ही परिवार द्वारा लड़कों को पलटवार करने और बदला लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किसी लड़ाई के दौरान मार खाने वाले पक्ष की तरफ होने या विपक्षी के सामने हार जाने की बजाय उन्हें 'पलट कर वार करना' सिखाया जाता है। यह भी, कि जीतने को प्रत्येक परिस्थिति के लक्ष्य के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है ताकि चित्त पर प्रतिस्पर्द्धा की छाप पड़े और किसी भी कीमत पर जीत को हासिल किया जाए।

पुरुषत्व को किसी व्यक्ति की आयु, धर्म, जाति, वर्ग, प्रजाति, नृजातीयता और लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) से भी आकार मिलता है। चूँकि पितृसत्ता असमानता और श्रेणीतन्त्रीय सामाजिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करती है, इसीलिए यह पुरुषों को श्रेष्ठतर मानती है। ऐसे पुरुषों को महिलाओं की तुलना में और उन पुरुषों की तुलना में ऊँचा स्थान दिया

जाता है, जो अपनी पद–प्रतिष्ठा और हैसियत के कारण निम्नतर स्थिति में होते हैं। ऊँचे स्थान वाले ये पुरुष महिलाओं के साथ–साथ, उन पुरुषों को भी आदेश देते हैं और उन पर नियन्त्रण रखते हैं, जो पद–प्रतिष्ठा और हैसियत में नीचे होते हैं। इस अर्थ में, पुरुषत्व की श्रेष्ठता को पितृसत्ता से भी समर्थन मिलता है क्योंकि पुरुषत्व न सिर्फ पुरुषों और महिलाओं के बीच के सम्बन्ध को परिभाषित करता है, बल्कि यह पुरुषों के बीच सम्बन्ध को भी परिभाषित करता है। यह भी देखा गया है कि अपने अधीनस्थों पर प्रमुखता बनाने के लिए सार्वजनिक जीवन में महिलाएँ भी कार्य करने या नेतृत्व करने के पुरुषवाचक तरीकों का अनुसरण करती हैं ताकि वे पुरुषों की तरह आक्रामकता और नियन्त्रण दर्शा सकें। एक धारणा (परसेप्शन) यह है कि महिलाएँ शक्ति की व्यवस्था का पुरुषत्वीकरण किए बिना सफल नहीं हो सकतीं। इससे यह सुझाव मिलता है कि हमें पुरुषत्व और स्त्रीत्व, दोनों की अवधारणाएँ समझनी पड़ेंगी। और हमें इस तथ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए कि ये निर्मितियाँ जीव–वैज्ञानिक नहीं हैं, बल्कि ये चेतना की संरचनाएँ हैं, जो पुरुषों और महिलाओं, दोनों में उपस्थित हो सकती हैं।

3.6 पुरुषत्व की निर्मिति (रचना)

यह एक मिथक है कि पुरुषत्व जीव–वैज्ञानिक होता है, यानी अपने शरीर क्रिया विज्ञान के परिणामस्वरूप पुरुषों के पास पुरुषवाचक अभिलक्षण होते हैं या यह सब कुछ हार्मोनों का खेल होता है। तब हमें यह विश्वास करना पड़ेगा कि सभी पुरुष रोबदार/घमण्डी, आक्रामक, तुनकमिजाज/गर्ममिजाज और हिंसक होते हैं तथा उनमें से कोई भी पुरुष भिन्न नहीं हो सकता क्योंकि सभी की जीव–वैज्ञानिक रचना समान ही होती है। लेकिन हमें ऐसे पुरुष अवश्य मिलते हैं, जिनके भीतर इनमें से अनेक अभिलक्षण नहीं मौजूद होते। फिर सोचिए कि एक पुरुष जो अपनी पत्नी के सामने इतना रोबदार और हिंसक होता है, वही अपने मालिक (बॉस) के सामने क्यों इतना अधिक दीन–हीन और भयग्रस्त हो जाता है? इससे साबित होता है कि पुरुष ठेठ पुरुषवाचक व्यवहार को वहीं वर्णित या रूपायित करते हैं, जहाँ उनके पास शक्ति और प्रभाव की हैसियत होती है, अन्यथा वे अधीनस्थ स्थिति में होने पर तथाकथित 'स्त्रीवाचक गुणों' के सामने घुटने टेक देते हैं। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि पुरुषत्व और इस सन्दर्भ में स्त्रीत्व कोई जीव–वैज्ञानिक निर्मितियाँ नहीं हैं, बल्कि ये पुरुषों और स्त्रियों के बीच के सम्बन्धों को विनियमित करने वाले श्रेणीतन्त्र और शक्ति की गतिकी से शासित होती हैं!

बॉक्स सं. 3.3

पुरुषत्ववाद एक दृष्टिकोण है जो पुरुषों की श्रेष्ठता और उनके प्रभुत्व में विश्वास करता है और उसका औचित्य साबित करता है। यह पुरुषों के अनन्य मत, उनकी अनन्य अभिवृत्ति, मूल्यों, व्यवहार और अभिलक्षणों को प्रेक्षित करने और उन्हें प्रोत्साहित करने से सन्दर्भित होता है।

एण्ड्रोजिनी वह अवस्था है, जिसमें पुरुष और महिला जेंडरों, दोनों के अभिलक्षण/दिखावट पायी जाती है।

निम्नलिखित अनुभागों में आप पुरुषत्वों (masculinities) के विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ेंगे।

3.7 पुरुषत्व (masculinities) के विभिन्न रूप

कॉनेल (1995) पुरुषत्व के निम्नलिखित रूपों पर चर्चा करती हैं :

- **वर्चस्वमूलक पुरुषत्व :** पुरुषत्व का वह रूप है जो प्रभावी होता है और जो महिलाओं और पुरुषों पर वर्चस्व स्थापित करने की एक सफल रणनीति को अभिव्यक्त करता है। कॉनेल इसे पुरुषत्व के ऐसे सत्तावादी सांस्कृतिक रूप के नाम से सन्दर्भित करती हैं, जो पुरुषों के प्रभुत्व और महिलाओं के सम्पूर्ण समर्पण की माँग करते हुए महिलाओं की अधीनता का समर्थन करता है। इसकी निर्मिति ऐसे अनेक अन्य पुरुषत्वों (masculinities) के सम्बन्ध में भी होती है जो वर्ग, जाति, प्रजाति और लैंगिकता द्वारा प्रभावित होते हैं। यद्यपि यह पुरुषत्व का एक प्रभावी रूप है किन्तु बहुत कम पुरुष ही मानकों तक सचमुच पहुँच सकते हैं। इस वजह से अनेक पुरुषत्वों का उद्‌भव होता है, जैसाकि नीचे चर्चा की गई है।

- **अधीनस्थ पुरुषत्व :** पुरुषों के समूहों के बीच भी प्रभुत्व और अधीनता के जेंडर सम्बन्ध मौजूद होते हैं। उदाहरण के लिए, समलैंगिक पुरुष अनेक प्रथाओं/व्यवहार/अभिवृत्तियों के जरिये विषमलैंगिक पुरुषों के अधीन होते हैं। समलैंगिक पुरुषों को सांस्कृतिक और आर्थिक बहिष्करण का सामना भी करना पड़ता है। ये गलियों में होने वाली हिंसा, कार्यस्थलों पर होने वाले भेदभाव तथा व्यक्तिगत रूप से किए जाने वाले बहिष्कार का लक्ष्य होते हैं। ऐसा दमन समलैंगिक पुरुषत्वों को पुरुषों के बीच जेंडर श्रेणीतन्त्र में सबसे नीचे ला खड़ा करता है। समलैंगिक (Gay) पुरुषत्व सर्वाधिक सहज रूप से दिखाई देने वाला पुरुषत्व है लेकिन यह अकेला अधीनस्थ पुरुषत्व नहीं है। कुछ विषमलैंगिक (Heterosexual) पुरुष और लड़के भी उपहास का पात्र बनते हैं, जब स्त्रीवाची विशेषताओं से युक्त संस्कार प्रदर्शित करने के कारण उन्हें कायर (स्त्रैण), बेवकूफ, उबाऊ, माँ का लाडला बेटा आदि जैसे अपशब्दों से सम्बोधित किया जाता है।

- **सहभागितामूलक (या सह–अपराधमूक) पुरुषत्व :** पुरुषत्व के वर्चस्वमूलक पैटर्न (व्यवहार और अभिवृत्ति) को अमल में लाने वाले पुरुषों की संख्या समग्रतः हमेशा बहुत कम होती है। लेकिन इस वर्चस्वमूलक रूप का लाभ बहुत सारे पुरुषों को 'स्पिल–ओवर बोनस' की शक्ल में मिलता है। यहाँ पुरुषों को कोई ऐसा डर या खतरा नहीं होता कि वे वर्चस्वमूलक पुरुषत्व के सबसे आगे वाले मोर्चे पर रहकर आघात सहें, बल्कि इन पुरुषों को लाभ अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है। इस प्रकार, वे इस पुरुषत्व में सहभागी हो जाते हैं क्योंकि यह समाज में महिलाओं की व्यापक अधीनता के कारण पुरुषों को होने वाले सामान्य लाभ को हासिल करने में उनकी मदद करता है।

- **हाशियाकृत पुरुषत्व :** यहाँ जेंडर की पारस्परिक क्रिया अन्य संरचनाओं, जैसे–वर्ग, प्रजाति या जाति के साथ होती है। इसके कारण आगे जाकर पुरुषत्वों के बीच अधिक श्रेणीतन्त्रीय सम्बन्धों का जन्म होता है। यह प्रभुत्वशाली और अधीनस्थ वर्गों, जातियों या नृजातीय समूहों में पुरुषत्वों के बीच एक सम्बन्धमूलक स्थिति (relational situation) है।

पिछले कुछ अनुभागों में आपने जो सीखा है, उसके मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित अभ्यास करें :–

प्रगति परीश्रम अभ्यास

1) पुरुषत्व क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पुरुषत्वों के विभिन्न रूपों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

आइए अब उस महत्वपूर्ण सम्पर्क (linkage) पर निगाह डालें जो पितृसत्ता और पुरुषत्व के बीच होता है।

3.8 पितृसत्ता और पुरुषत्व (masculinity)

पितृसत्ता और पुरुषत्व आपस में बहुत नजदीकी से जुड़े हुए हैं। पुरुषों के प्रभुत्व का सिद्धान्तीकरण करने के परिणामस्वरूप इन दोनों चीजों का उद्भव 1960 के दशक में हुआ। जैसाकि आप पिछली इकाई में पहले ही पढ़ चुके/चुकी हैं, पितृसत्ता पुरुषों का महिलाओं और अन्य पुरुषों पर व्यवस्थित प्रभुत्व है। यह भी, कि पितृसत्ता मुख्य रूप से सामाजिक संस्थाओं और संरचनाओं के ज़रिये कार्यान्वित की जाती है, जबकि पुरुषत्व (masculinities) वैकल्पिक तरीकों द्वारा पुरुषों के जेंडर सम्बन्ध अभिव्यक्त किए जाते हैं। यह भी, कि अधिकांशतः यह किसी व्यक्ति या किन्हीं व्यक्तियों के एक छोटे समूह तक सीमित होता है। उदाहरण के लिए, हम कह सकते हैं कि एक संस्था के रूप में परिवार पितृसत्तात्मक होता है, जबकि हो सकता है कि परिवार का मुखिया (अनुमानतः एक पुरुष) वर्चस्वमूलक पुरुषत्व को प्रदर्शित (portray) कर रहा हो।

अक्सर पितृसत्ता और पुरुषत्व का प्रयोग अदल–बदल कर किया जाता है, जबकि ये दोनों अपने अभिविन्यास (orientation) में और सम्बन्धित संकल्पनाओं के पदों में अलग–अलग हैं। लेकिन पुरुषत्व से आक्रामकता और प्रभुत्व जैसी पारम्परिक रूप से जुड़ी हुई अनेक नकारात्मक विशेषताएँ पितृसत्ता के कार्य हैं। पितृसत्ता पुरुषत्व की असन्तुलित अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर सकती है। वास्तव में पुरुषत्व को समझने का उद्देश्य पुरुषों को पितृसत्तात्मक बदनामी से और इसके परिणामस्वरूप होने वाले पुरुषवाचक अनुभवों की कमी के डर से मुक्त करना है। पितृसत्ता शक्ति और अधीनता के सामाजिक जगत का प्रावधान करती है, जिसमें पुरुषों को प्रतिस्पर्धा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है अगर वे विरासत में मिले अपने पुरुषत्वों (masculinities) का लाभ लेना चाहते हों।

जब पितृसत्तात्मक धारणाओं का मुकाबला किया जाता है, तो वर्चस्वमूलक पुरुषत्व शक्ति की रक्षा करने के लिए परिवर्तित हो जाता है।

पितृसत्ता के लाभ पुरुषों को असमान रूप से मिलते हैं। भारत में वर्चस्वमूलक पितृसत्ता वर्ग, जाति और विषमलैंगिकता (heterosexuality) से प्रभावित होती है। यह स्त्रीत्वों (femininities) और विभिन्न अधीनस्थ पुरुषत्वों (masculinities) के सम्बन्ध में निर्मित की जाती है, जो एक बार फिर समाज में निम्नतर प्रस्थिति से और गैर–मानकीय लैंगिकताओं से सम्बद्ध होते हैं, जैसाकि श्रमिक वर्ग, दलितों और समलैंगिकों के मामले में होता है।

बॉक्स सं. 3.4

पितृसत्ता और पुरुषत्व के बीच चक्रीय सम्बन्ध

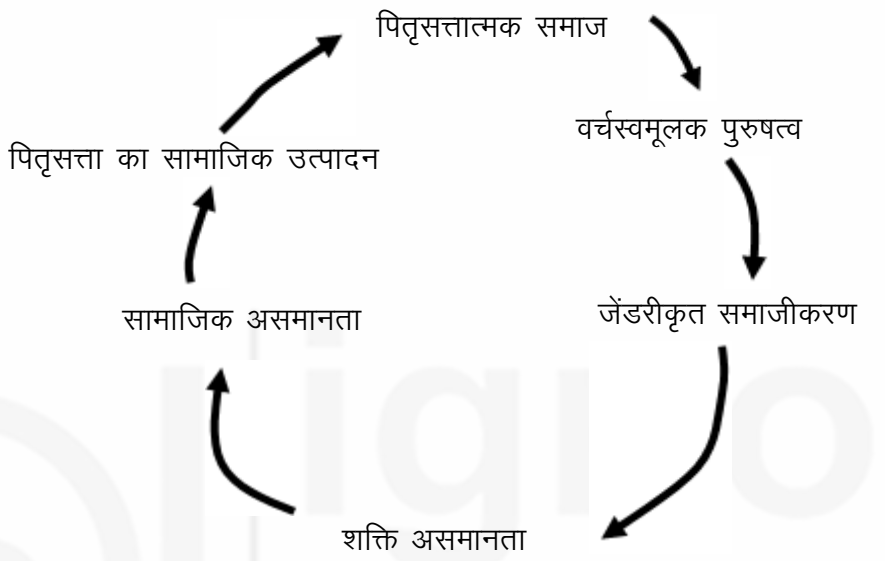

स्रोत : एलेक्स स्कॉट सैमुएल (www-scielosp-org)

आगे हम पुरुषत्व और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के पारस्परिक संबंध के विषय में पढ़ेंगे।

3.9 पुरुषत्व और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा

महिलाओं से उम्मीद की जाती है कि वे पुरुषों के नियन्त्रण में रहें। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि किसी महिला से विवाह करने के बाद उसका पति (माना जाता है कि यह उस स्त्री का स्वामी है) सोचता है कि पत्नी को नियन्त्रण में बनाए रखने के लिए उस पर आपा खो देना या उसे पीटना उसका अधिकार है। रोचक तो यह है कि कई महिलाएँ यह स्वीकार करती हैं कि अगर अपने पति की माँगों को पूरा न कर पाने पर, पति द्वारा उन पर हिंसा का प्रयोग किया जाता है, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। ऐसा महिलाओं के सामाजिक प्रशिक्षण (अनुकूलन) के कारण होता है।

हिंसा पुरुषों द्वारा महिलाओं पर अपना प्रभुत्व और अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए अधिकांशतः थोप दी जाती है। इसे अनेक समाजों में स्वीकार किया जाता है और इसलिए महिलाओं पर हिंसा करने वाले पुरुष बच निकलते हैं। हिंसा महिलाओं को अधीनता की स्थिति में बनाए रखती है और सामाजिक नियन्त्रण में भी बनाए रखती है।

अनेक राष्ट्रीय सर्वेक्षणों ने दर्शाया है कि भारतीय समाज में घरेलू हिंसा अत्यधिक प्रचलित है और विवाहित महिलाओं में से पचास प्रतिशत महिलाएँ इसे अपने वैवाहिक जीवन के सामान्य अंग के रूप में प्रतिवेदित करती हैं। इन सर्वेक्षणों/अनुसन्धानों का इससे भी अधिक चिन्ता में डालने वाला निष्कर्ष यह है कि घरेलू हिंसा निजी या गोपनीय स्तर पर नहीं होती। समुदाय को इसकी जानकारी होती है लेकिन परिवार का निजी मामला मानकर इसकी उपेक्षा कर दी जाती है।

अनुसन्धान यह भी दर्शाता है कि परिवार में लड़कों और लड़कियों के जेंडरीकरण में घरेलू हिंसा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह उन जेंडर पहचानों को आकार भी देती है, जो लड़कों और लड़कियों द्वारा अपने परिवारों में और व्यापक रूप से समाज में अभिव्यक्त की जाती हैं। वे अपने माता–पिता के प्रतिमान (पैटर्न) और व्यवहार से सीखते हैं। बड़े होने की प्रक्रिया के दौरान लड़के जिस हिंसा को देख चुके होते हैं, उसे जारी रखना वे उचित मानते हैं तथा लड़कियाँ इसे स्वीकार करते हुए आत्मसात कर लेती हैं और इसके प्रति सहनशील होती चली जाती हैं। हमारा लोक–साहित्य भी किसी पुरुष प्रेमी के हिंसक व्यवहार को महिमामण्डित करता है!

इस प्रकार, पितृसत्तात्मक समाजों में पुरुषों की हिंसा और आक्रामकता का औचित्य पुरुषत्व की निशानी के तौर पर स्थापित किया जाता है। पुरुषों से उम्मीद की जाती है कि वे परिवार में महिलाओं और बच्चों के अन्नदाता और संरक्षक बनें। इस प्रकार, पारिवारिक सदस्यों को अनुशासन में रखने को पुरुष अपना कर्त्तव्य मानते हैं ताकि परिवार/समुदाय की प्रतिष्ठा सुरक्षित रहे।

बॉक्स सं. 3.5

> अगर हम हिंसा, संघर्ष और युद्धों को कम करना चाहते हैं, अगर हम शान्ति चाहते हैं, अगर हम सार्थक सम्बन्ध चाहते हैं और अगर सतत विकास में सचमुच हमारी रुचि है तो हमें पुरुषों और पुरुषत्व को समझना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त लड़कों/पुरुषों और लड़कियों/महिलाओं के बीच हमें साझेदारी का विकास करना होगा ताकि जेंडर न्याय हासिल किया जा सके। महिलाएँ आन्दोलन का नेतृत्व कर सकती हैं लेकिन विशाल संख्या में पुरुषों को इसमें शामिल करना होगा।
>
> ***कमला भसीन, 2004 पृष्ठ 5***

आप इस इकाई में पहले ही पढ़ चुके हैं कि लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) और पुरुषत्व आपस में जुड़े हुए हैं। आइए इस पर दुबारा निगाह डालते हैं ताकि यह समझा जा सके कि ये दोनों आपस में किस तरह जुड़े हुए हैं।

3.10 लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) और पुरुषत्व

आपने सीखा है कि पुरुषत्व आक्रामकता, प्रभुत्व और नियन्त्रण का प्रतिनिधित्व करता है। तब यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि पुरुषत्व यौन सम्बन्धों समेत सभी प्रकार की पारस्परिक क्रियाओं और सम्बन्धों को प्रभावित करता है। पुरुषों की लैंगिकता, आक्रामकता और हिंसा अनेक तरीकों से सम्बन्धित हैं। इसका एक उदाहरण पुरुषों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा और उक्तियाँ हैं। गौर करने पर आप पाएँगे कि पुरुषों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सभी दुर्वचनों (गालियों) के लैंगिक निहितार्थ होते हैं और पुरुष हर ऐसी चीज के बारे में इन दुर्वचनों का प्रयोग बहुत ही सहजता से करते हैं, जो उन्हें करनी होती हैं या नहीं करनी होती हैं या जिस चीज के बारे में वे नाराज होते हैं।

पुरुषों का मस्तिष्क सेक्स को एक नियन्त्रणकारी क्रियाविधि (controling mechanism) के रूप में ग्रहण करता है और जो महिलाएँ कभी यौनिक पेशगियों के समक्ष प्रतिक्रिया देने या प्रस्तुत होने से इनकार करती हैं, वे इसके भयंकर दुष्परिणाम झेलती हैं। आपने युवा महिलाओं पर तेजाब फेंकने की अनेक घटनाओं के बारे में अखबारों में जरूर पढ़ा होगा। ये ऐसी युवा महिलाएँ होती हैं जिन्होंने अपराधी द्वारा की गई यौनिक पेशगियों का विरोध किया हुआ होता है और अपराधी इस दावे के साथ उस महिला पर तेजाबी हमला करता है कि अगर वह महिला उसकी नहीं हुई, तो वह किसी और की होने लायक नहीं रह जाएगी।

पुरुष की हिंसक लैंगिकता ही सार्वजनिक स्थलों, जैसे–सड़कों, जन परिवहन के साधनों, शैक्षणिक संस्थाओं और कार्यालयों में होने वाले यौन उत्पीड़न के लिए जिम्मेदार है (इस पाठ्यक्रम के खण्ड 5 की इकाई 3 पढ़ें)। किसी महिला को दण्ड देने के लिए पुरुष उसका बलात्कार करता है। **'निर्भया बलात्कार काण्ड'** पर निगाह डालिए, जहाँ एक पुरुष के साथ रात में बाहर निकलने के दण्डस्वरूप महिला का क्रूरतापूर्ण बलात्कार किया गया और उस महिला के मित्र को भी पीटा गया क्योंकि वह एक महिला के साथ बाहर घूम रहा था।

इस प्रकार, बलात्कार पुरुषत्व, लैंगिकता और हिंसा के बीच के सम्बन्ध का सबसे अधिक भीषण दुष्परिणाम है। बलात्कार का उपयोग एक हथियार के रूप में युद्धों, प्रलयों (holocausts) और साम्प्रदायिक दंगों के दौरान प्रभावित समुदायों और राष्ट्रों के पुरुषों और महिलाओं को दण्डित करने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। भसीन (2004, पृष्ठ 32) लिखती हैं, "हिंसक पुरुषत्व के कारण महिलाओं को हर किसी के पाप की कीमत चुकानी पड़ती है, और खासतौर से महिला के रूप में जन्म लेने के बुनियादी पाप की कीमत चुकानी पड़ती है।"

एक पुरुष द्वारा दूसरे पुरुष के विरुद्ध हिंसा भी आम बात है और समकालीन समाजों में ऐसी हिंसा बढ़ रही है। यह बहुत ही हानिकारक है और यह स्वयं को सशक्त बनाती जा रही है। यह सिद्ध करने के लिए प्रमाण मौजूद हैं कि युवावस्था में जाकर हिंसक और आक्रामक हो जाने की सम्भावना ऐसे लड़कों में अधिक होती है, जिन्होंने अपने बचपन में बाल–अधिकारों का उल्लंघन और दुर्व्यवहार झेला होता है। अपराधों में संलिप्त अधिकांश पुरुषों के बारे में यह पाया गया है कि उनके बचपन में उन पर अत्याचार और हिंसा की गयी थी। इस तरह यह दुष्चक्र जारी रहता है। यह पुरुषत्व की धारणा ही है जो लड़कों और पुरुषों को ताकतवर और बलशाली होने की तरफ धकेलती है।

अतः यह समझना महत्वपूर्ण है कि आपराधिक प्रवृत्ति, अपराध और पुरुषत्व गली–मुहल्लों की लड़ाइयों, वसूली की घटनाओं, भूमि और सेक्स सौदों और अण्डरवर्ल्ड माफिया की अन्य गतिविधियों के रूप में सचमुच के जीवन की स्थितियों में किस प्रकार जुड़े हुए हैं और किस प्रकार अभिव्यक्त होते हैं।

बॉक्स सं. 3.6

> पुरुषों की अधिक आक्रामकता अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ लैंगिकता (सेक्सुअलिटी) के क्षेत्र में भी व्याप्त होती है। सामान्यतः यौन सम्बन्ध की शुरूआत पुरुष करते हैं। महिलाओं की लैंगिकता के बारे में माना जाता है कि वह महिला की ग्रहणशीलता में होती है और इसका विस्तार स्त्रीवाचक व्यक्तित्व की समग्र संरचना, जैसे–निर्भर, निष्क्रिय, अनाक्रामक और विनम्र, तक कर दिया जाता है।
>
> **एन ओकले, 1985**

आइए अब इस बारे में अध्ययन करें कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व की भी धारणाओं को मीडिया किस प्रकार बल प्रदान करता है।

3.11 मीडिया की भूमिका

मीडिया जेंडरीकरण का एक महत्वपूर्ण एजेण्ट है, जो स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों की धारणाओं को मजबूत बनाता है। स्त्रीत्व और पुरुषत्व की धारणाओं की निर्मिति करने में खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सशक्त प्रभाव रखता है। इन चीजों के बारे में यह वक्तव्य देता है कि परिवार, समुदाय और व्यापक तौर पर समाज में क्या पहना जाए, कैसे बातचीत की जाए और किस प्रकार व्यवहार किया जाए। उदाहरण के लिए, मीडिया पुरुषों को आक्रामक और मर्दाने रूप में प्रक्षेपित करता है। क्या आपको पता है कि फिल्म इण्डस्ट्री में 'एंग्री यंग मैन' के ठप्पे वाला एक दौर आया था? हिन्दी फिल्म 'मर्द' इसका चित्रण करती है कि समाज लड़कों के जेंडरीकरण के साथ कैसा व्यवहार करता है और उन्हें इस चीज के लिए कैसे प्रेरित करता है कि वे आक्रामकता दिखाकर या हिंसक व्यवहार अपनाकर अपने वर्चस्वमूलक पुरुषत्व की निर्मिति करें। एक अन्य हालिया फिल्म 'एनएच 10' भी वर्चस्वमूलक पुरुषत्व का अत्यन्त मार्मिक चित्रण करती है। इस फिल्म में दिखाया गया है कि परिवार की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए न सिर्फ बहन और उसके मंगेतर पर, बल्कि उन लोगों पर भी हिंसा उचित है जो तथाकथित 'पापी लड़की' और उसके प्रेमी की मदद करते हैं। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि दोनों फिल्मों का अन्त प्रायः आम जिन्दगी में नहीं देखा जाता।

हमारे विज्ञापन भी पुरुषत्व और स्त्रीत्व के जेंडर सम्बन्धी दृढ़ प्रारूपों (स्टीरियोटाइप्स) को मजबूत बनाते हैं। पुरुषों की आक्रामकता और उनकी शक्ति को सराहा जाता है और उन्हें आदर्श की तरह प्रस्तुत किया जाता है, उदाहरण के लिए, एक पुरुष जब कीचड़ में या पहाड़ों पर तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल चलाता है, या ऊँचे पहाड़ों और इमारत से कूदता है तो वह अपनी सख्ती को ही दिखा रहा होता है। विज्ञापन से पहले चलाए जाने वाले इनकारी बयान (डिस्क्लेमर) पर शायद ही कोई ध्यान दिया जाता है। यह इनकारी बयान तो महज कानूनी औपचारिकता पूरी करने के लिए ही चलाया जाता है, वरना दर्शक के मन पर शक्ति का सख्त प्रदर्शन ही प्रमुख प्रभाव छोड़ता है।

आपको यह जरूर पता होगा कि एक टीवी चौनल ऐसा है जो हमेशा कुश्ती ही दिखाते रहने के लिए समर्पित है। WWF की सनक युवा लड़कों पर इस तरह सवार होती है कि वे डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. के अपने नायकों का अनुसरण करते हुए उनकी तस्वीरें पोस्टर की शक्ल में लगाते हैं और कमजोर लड़कों को घुमाकर देने में रस पाते हैं।

टीवी चौनलों पर प्रसारित किए जाने वाले धारावाहिकों या नाटकों पर निगाह डालिए। वृद्ध पुरुषों को अन्नदाताओं और संरक्षकों के रूप में दिखाया जाता है जबकि युवा पुरुषों के बारे में यह दिखाया जाता है कि वे, अलग–अलग रूपों और तीव्रता से, पुरुषों और महिलाओं दोनों के साथ हिंसा में लिप्त रहते हैं। टेलीविजन पर ऐसी मीडिया छवियों को देखकर लड़के आक्रामक पुरुषत्व को एक मानक की तरह स्वीकार करना सीखते हैं।

3.12 निष्कर्ष

हम पढ़ चुके हैं कि पुरुषत्व दूसरों पर शक्ति स्थापित करने से सम्बन्धित है। जो लोग प्रस्तुत होते हैं, वे स्त्रीवाचक हैं और जो लोग प्रभावी होते हैं, वे पुरुषवाचक हैं। यह ऐसा

सुझाव देने के लिए नहीं है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच की विविधता को मिटा देना चाहिए। यह ऐसा कहने के लिए भी है कि सभी पुरुष एक जैसे नहीं होते और सभी महिलाएँ एक जैसी नहीं होतीं। दृढ़ रूढ़ प्रारूपों (rigid stereotyping) को चुनौती देने और तोड़ने की जरूरत है क्योंकि यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए हानिकर है, भले ही यह उनके लिए अलग–अलग ढंगों और अलग–अलग तरीकों से हानिकर हो। व्यक्ति (चाहे वह व्यक्ति पुरुष हो या महिला) की योग्यता और उसके रुझान के आधार पर, न कि उसके जेंडरीकृत समाजीकरण के आधार पर, होने वाली विविधता और विकल्पों का खुलापन होना महत्वपूर्ण है। पितृसत्ता श्रेणीतन्त्रों और असमानताओं को पैदा करती है, जो न सिर्फ लड़कियों और महिलाओं के लिए हानिकारक हैं, बल्कि समग्र रूप से परिवार और समाज के लिए भी हानिकारक हैं।

इस प्रकार समाज द्वारा किया गया यह श्रेणीकरण कि क्या पुरुषवाचक है और क्या स्त्रीवाचक–अवास्तविक है क्योंकि यह सम्भव है कि ऐसा श्रेणीकरण इस बात को रूपायित न कर पाए कि तमाम पुरुष और महिला वास्तव में क्या महसूस करते हैं, बल्कि यह श्रेणीकरण केवल इतना ही रूपायित कर सके कि कुछ भी महसूस करने के लिए उनसे किस प्रकार की उम्मीद की जाती है। इसलिए किसी भी प्रगतिशील समाज के लिए पुरुषत्व को और स्त्रीत्व को भी पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है।

3.13 सन्दर्भ

Bhasin Kamala (2004) *Exploring Masculinity*

Connell, R. W. (1987) *Gender and Power: Society, the Person and Sexual Politics.* Cambridge: Polity

Messner, Michael, A. (2006) *Men and Masculinities in Whitehead*, Stephen, M (ed.) Men and Masculinities Critical Concepts in Sociology, London & New York: Routledge

3.14 अभ्यास के लिए प्रश्न

- पुरुषत्व को परिभाषित कीजिए।
- हमारे समाज में अनेक प्रकार के पुरुषत्व क्यों मौजूद हैं?
- पुरुषत्व और हिंसा के बीच के सम्बन्ध पर एक टिप्पणी लिखिए।
- व्याख्या कीजिए कि किसी समाज में जेंडरीकरण के एजेण्ट पुरुषत्वों को किस प्रकार आकार प्रदान करते हैं।

इकाई 4 दैनिक जीवन में जेंडर

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 सामाजिक निर्मिति और जेंडर

- 4.3.1 जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति
- 4.3.2 जेंडर समाजीकरण
- 4.3.3 लड़की की निर्मिति

4.4 लैंगिक पृथक्करण का व्यवहार

4.5 श्रम विभाजन एवं कार्यक्षेत्र

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 सन्दर्भ

4.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई को जेंडर और विकास अध्ययन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए बनी इकाई से ग्रहण करते हुए उसे स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए रूपांतरित किया गया है। जैसाकि इकाई का शीर्षक संकेत करता है, हमारा मुख्य उद्देश्य केस स्टडीज और उदाहरणों का उल्लेख करते हुए जेंडर की सामाजिक निर्मिति के विविध आयामों को और उसके अर्थ को समझना है। जेंडर की सामाजिक निर्मिति समाज के कई पहलुओं जैसे जाति, सगोत्रता (kinship), विवाह और अन्य चीजों के साथ जेंडर के सम्बन्धों को उजागर करती है। जेंडर–निर्मिति की प्रक्रिया को महिलाओं के जीवन के कई पहलुओं जैसे कि कार्य, निर्णय–निर्माण, ऑनर किलिंग और स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता के प्रतीकों के सम्बन्ध में व्याख्यायित किया जा सकता है। जेंडर निर्मिति सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों पर प्रचालित होती है और बहुत हद तक समाज की संस्थागत व्यवस्थाओं में निहित रहती है। इस इकाई में जेंडर निर्मिति की प्रक्रिया का वर्णन सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है जिससे कि सामाजिक रूप से निर्मित जेंडर के चलते महिलाओं के प्रति भेदभाव और उनके द्वारा सामना किए जाने वाली लैंगिक असमानता की जटिल प्रक्रिया को समझा जा सके।

इकाई में जेंडर की सामाजिक निर्मिति पर चर्चा की गई है। इकाई की शुरूआत सामाजिक निर्मिति के अर्थ की व्याख्या से होती है और जेंडर को संस्कृति, लिंग पृथक्करण, कार्यबल भागीदारी, निर्णय निर्माण, ऑनर किलिंग और स्वायत्ता तथा स्वतंत्रता के प्रतीकों के सम्बन्ध में समझने की कोशिश की गई है। जेंडर निर्मिति पर अगला अनुभाग मुख्य रूप से संस्कृति और विभिन्न संरचनाओं जैसे कि कार्य, लैंगिक पृथक्करण और श्रम के विभाजन पर केन्द्रित है, जो लैंगिक अन्तरों के आधार पर चल रहे जेंडर विभाजन को स्थायी बनाए रखता है। इसी प्रकार कार्य और श्रम के लिंग आधारित विभाजन वाले भाग में हमने जेंडर की चर्चा एक विश्लेषणात्मक औजार के रूप में की है जिससे कि असमानताओं को समझा जा सके।

ये असमानताएँ कार्यों के श्रेणीतन्त्रीकरण के तरीकों, संसाधनों के असमान वितरण, खेती और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में महिलाओं के कार्यों की अनदेखी और घरों व परिवार के अन्दर कार्य क्षेत्रों के लिंग आधारित अलगाव में दिखलाई पड़ती हैं।

आइए इस इकाई के उद्देश्यों की ओर एक निगाह डालते हैं।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात, आप सक्षम होंगे कि आप :

- समाज की व्यवस्था और संस्कृति के सम्बन्ध में जेंडर निर्मिति की प्रक्रियाओं की व्याख्या कर सकें;
- विकास संकेतकों जैसे कि लैंगिक पृथक्करण (लिंग आधारित अलगाव), श्रम विभाजन, निर्णय–निर्माण और समाजीकरण के सम्बन्ध में जेंडर निर्मिति के निहितार्थों का परीक्षण कर सकें;
- जेंडर और समाज की संरचनात्मक व्यवस्थाओं के बीच संबध का परीक्षण कर सकें; और
- जेंडर निर्मिति की सार्वभौमिक स्थितियों के आवश्यक लक्षणों का विश्लेषण कर सकें।

4.3 सामाजिक निर्मिति और जेंडर

प्रायः कहा जाता है कि सामाजिक वास्तविकता जैसी कोई चीज नहीं होती। फिर प्रश्न उठता है कि आखिर 'सामाजिक निर्मिति' क्या है? कैसे किसी समाज का दृष्टिकोण या सामाजिक निर्मिति आकार ग्रहण करती है? क्या यह अपने आप आकार ग्रहण करती है? क्या यह संस्कृति विशिष्ट होती है? आइए हम सामाजिक बनावट की इस प्रक्रिया का परीक्षण करते हैं।

प्रतिदिन विभिन्न सामाजिक अंतर्क्रियाओं के दौरान हम विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन करते हैं, तमाम घटनाओं का अनुभव करते हैं। ये घटनाएँ जिनका अनुभव हम व्यक्तिगत रूप से करते हैं, हमारे मन में उस समाज या दुनिया की एक तस्वीर बनाने में मदद करती हैं। वास्तव में जो कुछ भी हमारे साथ प्रतिदिन घटित होता है, उसे हम दुनिया और समाज की अपनी समझ के चश्मे के आधार पर देखते जाते हैं। दुनिया या वस्तुओं के बारे में प्रतिदिन की ये संवेदनाएँ हमारी सामाजिक वास्तविकता का या सामाजिक वास्तविकता की निर्मिति का आधार बनती हैं। इस अर्थ में सामाजिक निर्मिति एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत मनुष्य और अन्य सामाजिक संस्थाएं और व्यवहार आंतरिक रूप से सम्बन्धित रहते हैं। सामाजिक निर्मिति पर लोगों के किसी खास समूह या वर्ग का भी प्रभाव पड़ता है। यह उनसे आकार भी ग्रहण करती है और उनके हितों से प्रभावित भी होती है। इस अर्थ में प्रभावशाली समूहों की संस्कृति, मानकों, विचारधाराओं और मूल्यों का प्रयोग किसी खास सामाजिक निर्मिति के रूप को बरकरार रखने और उसे न्यायसंगत ठहराने के लिए किया जाता है। इसलिए, सामाजिक निर्मितियाँ ऐसी प्रक्रियाएँ हैं जिनके माध्यम से हम दैनिक जीवन को समझते हैं और जाति, वर्ग, धर्म, समुदाय, गोत्र, जेंडर और अन्य आधारों पर लोगों का वर्गीकरण करने की कोशिश करते हैं। इस तरह लोगों का यह वर्गीकरण सामाजिक निर्मिति का परिणाम होता है।

प्रगति परीश्रम अभ्यास

1) सामाजिक निर्मिति क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक निर्मितियों के आधार पर समूह किस तरह वर्गीकृत किए जाते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब हम सामाजिक निर्मिति और जेंडर के बीच सम्बन्धों का अध्ययन करें।

चूँकि हम जेंडर की सामाजिक निर्मिति की छानबीन करेंगे, इसलिए हम कुछ पहलुओं, जैसे–लिंग (सेक्स) और जेंडर के बीच अन्तर के साथ साथ जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति पर भी केन्द्रित रहेंगे।

लिंग (सेक्स) और जेंडर

जेंडर की सामाजिक निर्मिति की समझ की शुरूआत दो अवधारणाओं की व्याख्या से होती है। ये दो अवधारणाएं हैं – जेंडर और सेक्स। संकल्पनाओं के रूप में ये दोनों शब्द भिन्न–भिन्न अर्थ रखते हैं। जेंडर शब्द ऐसे अन्तरों, श्रेणीतन्त्रों, पदानुक्रमों की तरफ संकेत करता है, जो पुरुष और महिला के बीच मौजूद होते हैं। यह समाज में महिलाओं और पुरुषों द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं से सम्बद्ध सांस्कृतिक निर्मितियों की व्याख्या करता है। इसके अतिरिक्त, जेंडर इस पहलू का विश्लेषण करता है कि महिलाओं का व्यवहार किस प्रकार समाज के मानकीय व्यवहार के अनुरूप आकार ग्रहण करता है। एक संकल्पनात्मक औजार के रूप में जेंडर का प्रयोग महिलाओं और पुरुषों के मध्य पाई जाने वाली असमानता के संरचनात्मक सम्बन्धों के विश्लेषण के लिए किया जाता है। यह असमानता समाज में हर जगह परिलक्षित होती है जैसे कि परिवार और घर में, धर्म, जाति, श्रम बाजार, शिक्षा, पारिस्थितिकी, वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों और राजनीतिक संस्थाओं तक में। जबकि दूसरी ओर लिंग (सेक्स) महिला और पुरुष के बीच के जैविक अन्तरों को स्पष्ट करता है, जो सभी स्थानों और समय में एक समान बना रहता है।

इसलिए, जेंडर को एक ऐसी धारणा (notion) के तौर पर पारिभाषित किया जा सकता है, जो रूपरेखाओं का एक ऐसा समुच्चय प्रस्तुत करती है जिसके भीतर सामाजिक और विचारधारात्मक निर्मिति और लिंगों के बीच के अन्तरों के प्रतिनिधित्व को व्याख्यायित किया जाता है। जेंडर समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चे स्वयं की पहचान करते हुए

सामाजिक प्राणी के रूप में अपनी स्थिति ग्रहण करते हैं। उनकी यह पहचान निर्धारित जेंडर भूमिका और पुरुष या महिला के रूप में सामाजिक रूप से उपयुक्त व्यवहारों और विशेषताओं के साथ जुड़ी होती है। (स्टैनले एण्ड वाइज, 2002)

महिलाओं की पहचान सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत मातृत्वपरक भूमिका तथा महिलाओं द्वारा व्यक्तिनिष्ठ रूप से किए गए प्यार, दुलार, सहारे के अनुभवों के साथ जोड़कर देखी जाती है। जबकि सार्वजनिक क्षेत्र से पुरुषों की निकटता निर्वैयक्तिक और पेशेवर प्रकृति की है, जो स्त्रीत्व और पुरुषत्व की सामाजिक–सांस्कृतिक निर्मितियों के उत्पाद हैं। महिलाओं से प्राकृतिक माताओं, पत्नियों, पुत्रियों और गृहणियों के रूप में सामाजिक अपेक्षाएँ मात्र पितृसत्तात्मक निर्मितियों के कारण अस्तित्व में नहीं हैं, बल्कि यह समाज के भौतिक वातावरण में भी संचालित होती रहती है। कुछ नारीवादी भूगोलवेत्ताओं ने तर्क पेश किया है कि अंतरिक्ष और जेंडर सामाजिक रूप से निर्मित किए जाते हैं और महिलाओं का शरीर, उनकी गतिविधियाँ और उनकी गतिशीलता निश्चित भौतिक क्षेत्रों और संरचनाओं तक सीमित है। उदाहरण के लिए, यह माना जाता है कि घर की निर्मिति महिला की जेंडर भूमिका के परिणामस्वरूप होती है जबकि वही घर स्वतंत्रता और गतिशीलता तक महिलाओं की पहुँच को बाधित करता है, संकुचित करता है। इसी तरह से ऐसी महिलाएँ जो घरों से बाहर जाकर काम करती हैं और कॉल सेंटर इत्यादि जगहों पर काम करने के लिए रात में यात्राएँ करती हैं, प्रायः यौन उत्पीड़न, बलात्कार और हत्या की शिकार हो जाती हैं। यह श्रम को स्त्रीकृत करने के सिद्धान्त में एक विमर्श है जो दिखलाता है कि काल सेंटर उद्योग की समय–स्थान प्रणाली किस प्रकार अपनी प्रकृति में जेंडरीकृत है (पटेल, 2010)। लिंग (सेक्स) किसी व्यक्ति को उसके लैंगिक वर्गीकरण के साथ जोड़ता है और परिणामस्वरूप उक्त व्यक्ति को स्त्रीत्व और पुरुषत्व की सामाजिक धारणाओं के भीतर जकड़ देता है। जेंडर समाजीकरण की यह प्रक्रिया व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह अपने लैंगिक वर्गीकरण को सामाजिक स्तर पर कायम रखे।

4.3.1 जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति

जेंडर एक बहुत जटिल अवधारणा है जिसकी निर्मिति सामाजिक रूप से और निर्धारण सांस्कृतिक रूप से होता है। संस्कृति को सम्बन्धों के एक ऐसे संजाल (networks) के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो किसी विशेष समुदाय या समूह के जीवन के प्रतिमान (pattern) को एक अर्थ प्रदान करता है। संस्कृति जीवन के लगभग सभी पहलुओं को समाविष्ट करती है जिसमें उत्पादन के संगठन, परिवार और अन्य संस्थाओं की संरचना, समाज की विचारधाराएँ और मानकीय प्रतिमान तथा अन्तर्क्रियाओं या सम्बन्धों की प्रकृति शामिल होते हैं। जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति समाजीकरण के सन्दर्भ में पुरुषत्व और स्त्रीत्व की निर्मिति की बात करती है। इसका अर्थ है सामाजिक विकास के दौरान व्यक्ति स्त्रीवाचक या पुरुषवाचक होने के लिए जेंडरीकृत शरीर हासिल करते हैं। स्त्रीत्व और पुरुषत्व की निर्मिति परिवार, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक और धार्मिक संगठनों और संस्थाओं से भी आकार ग्रहण करती है। संस्कृति के सम्बन्ध में जेंडर की निर्मिति को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत वर्णित किया जा सकता है :–

- **जेंडर की निर्मिति प्रभुत्व के तंत्र को सहारा देती है :** जेंडर की श्रेणियाँ न तो कभी निष्पक्ष होती हैं और न ही समान। पुरुष और महिला के बीच असमान सम्बन्ध के तन्त्र के रूप में जेंडर कार्यक्षेत्र में, उत्पादन प्रक्रियाओं में, संसाधनों और शक्ति तक पहुँच में, विशिष्ट जेंडर भूमिकाओं को स्वीकारने में और श्रम बाजार में लैंगिक पृथक्करण के रूप में व्यक्त होता है।

- **जेंडर की निर्मिति बनाम जेंडर की वैयक्तिक अभिव्यक्ति :** नारीवादी मनोविश्लेषक मूल्यांकित करते हैं कि जेंडर को अनन्य रूप से सांस्कृतिक, भाषिक और राजनीतिक निर्मिति के तौर पर नहीं देखा जा सकता। इसलिए, जरूरत इस बात की है कि जेंडर की निदेशात्मक (prescriptive) निर्मिति और इन निर्मितियों पर वैयक्तिक विचारों में अन्तर किया जाना चाहिए। जेंडर की निदेशात्मक निर्मिति उन छवियों को संदर्भित करती है जो सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से निर्धारित की जाती हैं। उदाहरण के लिए, समाज में यह विचार गहराई से जड़ जमा चुका है कि किसी बच्ची को भविष्य में गृहणी बनने के लिए ही तैयार किया जाना चाहिए और समाज का यह विचार उसके पहनावे के चयन, उपयुक्त आचरण और महिलाओं को देखभाल करने या पोषण करने वाली गतिविधियों में लगाए जाने से व्यक्त होता है।

  वैयक्तिक विचार उन अन्तर्क्रियाओं के फलस्वरूप बनते हैं जो उस व्यक्ति की मानसिकता तथा सामाजिक–राजनीतिक या सांस्कृतिक या ऐतिहासिक मानकों के बीच घटित होती हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई लड़का/लड़की लिंग परिवर्तन के लिए शल्य चिकित्सा से गुजरता/गुजरती है तो दो प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है। ये दो प्रश्न इस प्रकार हैं : किसी व्यक्ति की जेंडर पहचान में परिवर्तन के बाद समाज उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया करता है? समाज के सदस्य किस हद तक विविध जेंडर भूमिकाओं और व्यवहारों को आत्मसात कर पाते हैं? यह बिन्दु हमारे सामने 'जेंडर व्यवहार (doing gender)' को एक संकल्पना के तौर पर चर्चा के लिए प्रस्तुत करता है। जेंडर व्यवहार में सामाजिक रूप से शासित बोधात्मक, अन्तर्क्रियात्मक और सूक्ष्म राजनीतिक गतिविधियों का जटिल समुच्चय शामिल रहता है जो पुरुषवाचक या स्त्रीवाचक प्रकृति की अभिव्यक्तियों के रूप में विशेष कार्य करता है (वेस्ट एण्ड जिम्मरमैन 2002)। इसलिए, जेंडर सामाजिक स्थितियों में अन्तर्निहित होता है अर्थात् यह 'सामाजिक व्यवस्थाओं का उत्पाद' और 'सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा उत्पादित' दोनों होता है। नया जन्म लेने वाला बच्चा उसी लैंगिक पहचान को लेकर आगे चलता है जिसे उस बच्चे पर समाज द्वारा थोपा गया होता है। अन्ततोगत्वा, माता–पिता या प्राथमिक रखवालों से लगातार अन्तर्क्रिया द्वारा शिशु धीरे–धीरे जेंडर पहचान ग्रहण कर लेता है। जेंडर व्यवहार एक प्रक्रिया है जो समाज में इस मूलभूत जेंडर विभाजन को वैधता प्रदान करती है।

बॉक्स सं. 4.1

एग्नेस का मामला : एक किन्नरलिंगी (Transsexual) लड़का

वेस्ट और जिम्मरमैन तीन विश्लेषणात्मक श्रेणियोंय जैसे–लिंग, लिंग श्रेणी और जेंडर की चर्चा करते हैं ताकि जेंडर व्यवहार (doing gender) की धारणा को समझा जा सके। एक किन्नरलिंगी (transsexual) लड़के एग्नेस की केस स्टडी गारफिन्केल द्वारा की गई थी। यह स्टडी जेंडर निर्मिति को समझने का बढ़िया उदाहरण होगी। सत्रह साल की उम्र में एग्नेस ने एक स्त्री की पहचान ग्रहण की और इसके कुछ बरसों बाद जेंडर निर्मिति को समझने के लिए लिंग परिवर्तन हेतु सर्जरी करवायी। उसके पास पुरुष जननांग थे और वह अपने को औरत के रूप में प्रस्तुत करना चाहती थी। सामाजिक रूप से निर्मित स्थिति में वह स्त्रीवाचक अभिलक्षणों को सीखने और स्त्रीत्व की धारणा का विश्लेषण करने के लिए बाध्य (obliged) हुई। उसके पास ऐसे लिंग (सेक्स) की जैविक विशेषताएँ नहीं थीं, जिसे सामाजिक रूप से मान्य स्त्री लिंग की विशेषताएँ कहा जाता है। इस बहस का अधिक केन्द्रित बिन्दु केसलर और

मैक्केन्ना की स्थिति है : वह यह कि जैविक मानदण्ड (लिंग) सार्वजनिक समझ से छिपा रहता है और व्यक्ति सामाजिक रूप से मान्य स्त्री या पुरुष मानदण्डों के अनुसार व्यवहार करना जारी रखता है। स्त्री या पुरुष जेंडर आरोपण प्रक्रिया का परिणाम है और जेंडर योग्यता–गतिविधि का महत्वपूर्ण भाग बनाता है। उदाहरण के लिए यदि एक बच्चा किसी व्यक्ति की सूट और टाई में तस्वीर देखता है, तो वह बच्चा तुरन्त उस तस्वीर का तादात्म्य पुरुष की छवि से जोड़ लेता है। लिंग कोटि (sex category) सामाजिक रूप से स्थित होती है और व्यक्ति द्वारा दैनिक अन्तर्क्रियाओं के माध्यम से ग्रहण की जाती है। लोग किसी व्यक्ति की गतिविधियों का अनुभव करते हैं और उसी के अनुरूप लिंग की कोटि का निष्कर्ष निकाल लेते हैं। इस प्रसंग में, जेंडर को संस्कृति और समाज के उत्पाद के रूप में समझा जाता है (सन्दर्भ वेस्ट एण्ड जिम्मरमैन, 2002)।

ऊपर दिए गए उदाहरण दिखलाते हैं कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व की श्रेणियाँ किस प्रकार सामाजिक रूप से निर्मित की जाती हैं। और यह भी कि जेंडर पहचान तभी सुनिश्चित की जा सकती है, जब जैविक श्रेणीकरण के साथ इसकी पुष्टि कर ली जाए।

4.3.2 जेंडर समाजीकरण

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई शिशु (child) एक सामाजिक प्राणी के रूप में रूपान्तरित होता है। सामाजिक प्राणी का अर्थ है कि वह सामाजिक मूल्यों, मानकों और सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार का पालन करता है। वृहत्तर सन्दर्भ में लैंगिक भूमिका के हिसाब से किया जाने वाला समाजीकरण महिलाओं के शोषण का साधन है। **स्टैनले और वाइज** तर्क देते हैं कि लैंगिक भूमिका को प्रायः जेंडर भूमिका यानी स्त्रीत्व या पुरुषत्व के गुणधर्म की अभिव्यक्ति करने के तौर पर समझ लिया जाता है।

विभिन्न संस्कृतियों में देखा गया है कि एक संस्था के रूप में परिवार जेंडर समाजीकरण और जेंडर भूमिकाओं को आत्मसात करने में सहायक बनता है। माँ या प्राथमिक देखभाल करने वाला व्यक्ति बच्चों के लिंग की श्रेणी के अनुसार उनसे अलग–अलग व्यवहार करता है। इस भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण में बच्चों को छूने, दुलार करने तथा लड़के के लिए स्वायत्तता का विचार और लड़कियों के लिए स्वायत्तता के अभाव जैसी बातें शामिल होती हैं। अधिकतर अभिभावक इस भेदभावपूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन बच्चों के लिए विशिष्ट प्रकार के खिलौने, विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें देते समय भी करते हैं। इन पुस्तकों आदि के जरिये बच्चों में तस्वीरों के माध्यम से यह समझ बनती चली जाती है कि माँ रसोई में काम करती है। इसके अतिरिक्त जेंडर भूमिका और व्यवहार टेलीविजन में भी ऐसे दिखाए जाते हैं कि बच्चे दैनिक जीवन में रूढ़िवादी (स्टीरियोटाइप्ड) जेंडर भूमिकाओं की पहचान करते जाते हैं। परिवार और माता–पिता प्राथमिक माध्यम के तौर पर सामने आते हैं जिनके जरिये रूढ़िवादी (स्टीरियोटाइप्ड) जेंडर भूमिकाओं की पहचान बच्चों तक पहुँचती है (स्टैनले एण्ड स्यू वाइज, 2002)।

प्रगति परीश्रम अभ्यास

1) जेंडर की सांस्कृतिक निर्मिति क्या है?

.....

.....

.....

2) समाजीकरण को परिभाषित कीजए।

.....

.....

.....

.....

.....

आइए, अब हम एक बच्ची (छोटी लड़की) की सांस्कृतिक निर्मिति के बारे में पढ़ें।

4.3.3 लड़की की निर्मिति

एक छोटी लड़की की निर्मिति में हम भारत जैसे पितृसत्तात्मक और पुरुषप्रधान समाजों में एक बच्ची के समाजीकरण की प्रक्रिया की चर्चा करेंगे। इस अनुभाग में हम उन बाधाओं पर प्रकाश डालेंगे जिनका सामना एक छोटी बच्ची को एक महिला बनने के दौरान समाजीकरण की प्रक्रिया में करना पड़ता है। दूबे (2001) समाजीकरण की प्रक्रिया को सन्दर्भित करते हुए इसे जेंडर समाजीकरण का एक रूप कहते हैं जिसमें महिला और पुरुष को जेंडरीकृत प्राणी के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है। ये जेंडरीकृत प्राणी भाषा, प्रथाओं, समारोहों और व्यवहारों के द्वारा तैयार किए जाते हैं। भारतीय परिवारों में जेंडर के अन्तर की धारणा प्रजनन के समय से शुरू हो जाती है – जैसे सन्तानोत्पत्ति के सम्बन्ध में माता और पिता दोनों अलग–अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। सांस्कृतिक रूप से यह माना जाता है कि पिता बीज प्रदान करने वाला होता है और माता धरती का प्रतीक होती है, जो बीज को धारण करती हैं और उसका पोषण करती हैं। ये अलग–अलग भूमिकाएँ सांस्कृतिक रूप से कल्पित होती हैं और परिवार, विवाह और नातेदारी के द्वारा लगातार चलती रहती हैं। इसलिए परिवार और नातेदारी, जेंडर समाजीकरण को समझने में केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं।

लड़की और मायका

स्त्रीत्व की निर्मिति एक जटिल और लगातार चलने वाली प्रक्रिया है जो भाषा, मुहावरों और प्रथाओं द्वारा व्यक्त होती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में विवाहित और अविवाहित दोनों तरीके की महिलाओं के लिए मायके का सन्दर्भ मुहावरों के रूप में वृहद स्तर पर प्रयोग किया जाता है। रोजाना की बातचीत में भी 'भाषण' या 'कहावतों' के रूप में बेटे/लड़के की चाहत को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, ऐसे माता–पिता को, जिनकी केवल एक संतान पैदा होती है और वह भी बेटी पैदा होती है, प्रायः ऐसी स्थिति में माना जाता है 'जिनका भविष्य अन्धकारमय होता है क्योंकि बुढ़ापे में सहारे के लिए उनके पास कोई नहीं होता।' (दूबे, 2001)। इसी तरह मायका या माता–पिता का घर लड़कियों के लिए हमेशा अस्थायी घर माना जाता है। इसलिए लड़कियाँ इसी धारणा के साथ बड़ी होती हैं कि उनका अपना घर शादी के बाद भविष्य में बनेगा।

मुहावरे और प्रथाएँ इस अपरिहार्य तथ्य का अहसास कराती रहती हैं कि लड़कियों की सदस्यता उनके मायके से पति के घर अर्थात ससुराल में स्थानान्तरित हो जाएगी। दूबे ने भारत के कई भागों में बोली जाने वाली कहावतों का संग्रह किया है। उड़ीसा में एक कहावत है– ''घी के साथ बेटी''। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि दोनों ही मूल्यवान

हैं मगर यदि सही समय पर नहीं निबटाया गया तो दोनों बदबू फैलाती हैं। इसी प्रकार, दूर्गा पूजा और गौरी पूजा जैसे कुछ त्यौहार हैं जो देवियों के सन्दर्भ में 'घर वापसी' जैसी धारणा को बल प्रदान करते हैं। ये त्यौहार तमाम अनुष्ठानों से युक्त होते हैं जो छोटी लड़कियों को यह संदेश देते हैं कि उन्हें अपनी माँ का घर छोड़ना है और उन्हें ऐसे ही त्यौहारों पर मायके में आमंत्रित किया जाएगा। एक छोटी लड़की की निर्मिति की शुरूआत उसी समय हो जाती है जब उसे यह अहसास होने लगता है कि मायके (पैतृक घर) की सदस्यता तो महज अस्थायी भर है। उसे इस अस्थायी सदस्यता के दौरान ही कुछ आदर्श स्त्रीवाचक व्यवहारों को सीखने की अनिवार्यता होती है।

लड़की के समाजीकरण की प्रक्रिया में स्त्रीत्व की सांस्कृतिक निर्मिति के दो चरण यौवन–पूर्व और यौवन–पश्चात शामिल होते हैं। लड़कियों में यौवन–पूर्व शुचिता के महत्व का भारत के विभिन्न क्षेत्रों जैसे महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक के साथ–साथ देश के अन्य भागों के रस्मों–रिवाजों में भी विशेष संज्ञान लिया जाता है।

बॉक्स सं. 4.2

केस विश्लेषण

नवरात्रि में कुँवारी कन्याओं की पूजा और उन्हें भोजन कराने की प्रथा पूरे भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है। त्यौहार के आठवें दिन, रजस्वला होने से पूर्व की कन्याओं की, जो दरअसल देवी माँ का प्रतिनिधित्व करती हैं, प्रथा के तौर पर पूजा की जाती है और उन्हें खाना खिलाने के साथ उपहार दिए जाते हैं। जेंडर विश्लेषण के लिए इससे निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :

1) इस त्यौहार में लड़कियों को दिया गया रूप निश्चित रूप से स्त्रीवाचक प्रकृति का होता है।
2) स्त्रीत्व की चेतना का निर्माण उनके पहनावे की शैली से और उनको दिए गए उपहारों के माध्यम से किया जाता है, और
3) रजस्वला होने के पहले और रजस्वला होने के बाद के बीच बहुत स्पष्ट अन्तर रखा जाता है और परिणामस्वरूप स्त्रियों की रजस्वला होने से पहले के समय से शुचिता और पवित्रता का भाव जुड़ा होता है।

इन रस्मों–रिवाजों में स्त्रीत्व की निर्मिति को प्रतीक का रूप प्रदान किया जाता है और व्यवस्थित ढंग से उपयुक्त स्त्रीवाचक व्यवहार की रूपरेखा लड़कियों के दिमाग में बैठा दी जाती है।

किशोरावस्था का आरम्भ एक दौर होता है जो महिलाओं के जीवन में बदलाव और रूपान्तरण के लिए जाना जाता है। यह दौर तमाम कैशोर्य प्रथाओं, खाने के नियमन और कुछ दिनों के लिए घर के अन्य सदस्यों से लड़कियों के अलगाव से जुड़ा होता है। ये प्रथाएँ व्यापक रूप से भारत में अपनायी जाती हैं। ये कैशोर्य प्रथाएँ लड़कियों में विवाह और मातृत्व के सन्दर्भ में यौन शुचिता को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करती हैं।

4.4 लैंगिक पृथक्करण का व्यवहार

लैंगिक पृथक्करण का अवलोकन एवं अध्ययन अधिकांशतः पेशेवर और आर्थिक संरचनाओं में किया जाता है, जो दिखलाता है कि किसी आर्थिक सुधार के दौर में महिलाएँ किन्हीं

विशिष्ट प्रकार के पेशों को अधिक अपनाती हैं। पर्दा प्रथा या महिलाओं को अलग रखने की प्रथा का पालन विभिन्न देशों और समुदायों के बीच व्यापक तौर पर किया जाता है और इसमें कार्यों और गतिविधियों में स्पष्ट तौर पर लैंगिक पृथक्करण निर्धारित होता है।

बांग्लादेश में, महिलाओं के अलगाव का व्यवहार निजी/बाह्य के विभाजन के आधार पर किया जाता है। लेखक कहता है कि बांग्लादेश की गरीब महिलाएँ दोहरे तौर पर एक खाँचेबद्ध अवस्था में रखी जाती हैं। गरीब महिलाओं को निष्क्रिय और कमजोर बनाए रखा जाता है, फिर भी उन्हें विकास के लिए सम्भावनाशील लक्षित समूह माना जाता है। महिलाओं की इस तस्वीर को तमाम सांस्कृतिक निर्मितियों के माध्यम से मजबूत किया जाता है जैसे कि, "महिलाओं को जीवित रहने के लिए हमेशा पुरुषों के संरक्षण की जरूरत होती है।" उदाहरण के लिए, निजी/बाह्य के विभाजन ने घरों की चारदीवारी से बाहर निकलने में महिलाओं की स्वतन्त्रता को कम किया है। इसलिए वे पारिवारिक जीवन के क्षेत्र के अन्दर ही गतिविधियाँ निष्पादित करती हैं (कबीर, 1990)।

श्रम बाजार में, भेदभावपूर्ण मजदूरी, कार्य की प्रकृति और कार्य की मात्रा के सम्बन्ध में महिला और पुरुष के बीच गहरी खाई है। परम्परागत तौर पर माना जाता है कि महिलाओं को पुरुषों पर निर्भर होना चाहिए। उदाहरण के लिए, परिवार के अन्दर महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच अपने पुरुष सहभागी के द्वारा होती है। इसी तरह श्रम बाजार में महिलाएँ मजदूरी पाने और अन्य कार्य अवसरों की खोज में दूसरे पुरुषों के माध्यम का प्रयोग करती हैं। अधिकांश महिलाएं असंगठित क्षेत्र में रोजगार करती है (महिला कार्यबल का 95.79 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में है जबकि पुरुष कार्यबल का 89.77 प्रतिशत)। श्रम बाजार में जेंडर के आधार पर भेदभाव किया जाता है और यह भेदभाव असंगठित और निजी क्षेत्रों में काम कर रही महिलाओं की सामाजिक–आथिक असुरक्षा का कारण बनता है (सेठ 2001)। इसी प्रकार राजनीतिक और तकनीकी रोजगार में भी महिलाओं की सहभागिता बहुत कम है। कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान बहुत अधिक है हालाँकि अधिकांश महिलाएँ सीमान्त कर्मकारों की तरह हैं। कृषि में महिलाओं और पुरुषों के बीच विभाजित काम की प्रकृति में भी भेदभाव किए जाते हैं। भारत के अधिकांश राज्यों में पुरुष जुताई और सिंचाई से सम्बन्धित कार्यों में लगे हैं और महिलाएँ अधिकांशतः बुआई, पौधों की देखभाल और कटाई जैसे कार्यों में लगी हैं। यह भी देखा गया है कि पुरुष खेतिहर उत्पादों के विपणन कार्यों में लगे हैं। संसाधनों के नियन्त्रण और आधिक्य से सम्बन्धित विषय को भी पुरुषों का कार्यक्षेत्र माना गया है। इतना ही नहीं, प्राथमिक देखभाल करने वाले की भूमिका में महिलाओं की स्थिति ऐसी हो जाती है कि वे लचीला और अस्थायी काम स्वीकार करने के लिए तैयार रहती हैं। यह भी सही निष्कर्ष निकाला गया है कि महिलाओं को खेती में 'आरक्षित सेना' की तरह माना जाता है जिन्हें श्रम बाजार से इसलिए बाहर रखा जा सकता है कि श्रम संकट की स्थिति में उनका प्रयोग किया जा सके। महिलाएँ एक कर्मचारी की तरह किसी संविदा में नहीं बँधतीं और उन्हें खराब सुरक्षा स्थितियों और अन्य संवेदनशील स्थानों में लगाए रखा जाता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए स्त्रियाँ कार्यबल के रूप में प्राथमिक महत्व की हैं लेकिन साथ ही स्वास्थ्य और श्रम सुरक्षा मानकों से वंचित भी हैं।

प्रगति परीश्रम अभ्यास

1) लैंगिक पृथक्करण जेंडर निर्मिति को समझने में कैसे सहायता करता है?

.....

.....

2) एक छोटी लड़की की सांस्कृतिक निर्मिति का क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

अब हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि जेंडर का श्रम विभाजन और कार्यक्षेत्र से क्या संबन्ध है।

4.5 श्रम विभाजन और कार्यक्षेत्र

जेंडर सम्बन्ध, श्रम के लैंगिक (Sexual) विभाजन के अन्दर समाहित होते हैं और प्रायः जेंडर संघर्ष उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए अफ्रीका में कृषि को प्रायः खेती की स्त्रैण प्रणाली समझा जाता है। कृषि में कार्यक्षेत्र का आबण्टन जेंडर के अनुरूप किया जाता है। अफ्रीका में महिलाओं और पुरुषों के बीच कार्यक्षेत्र का अलगाव ही महिलाओं और पुरुषों के बीच श्रम के सामाजिक विनिमय का संकेत करता है। हालाँकि महिलाओं का कार्यक्षेत्र दावों और बाध्यताओं के जटिल समुच्चय से घिरा होता है। जैसा **व्हाइटहेड** तर्क देते हैं कि अफ्रीका में दो भिन्न प्रकार के सामाजिक वातावरण महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों को निर्धारित करते हैं। महिलाओं के कार्यक्षेत्र में संसाधनों जैसे भूमि और उत्पादों तक उनकी पहुँच में उनके बच्चे, पति और परिवार के अन्य सदस्य भागीदार होते हैं। महिलाओं का दायित्व होता है कि वे अपने पति और परिवार के अन्य सदस्यों के लिए कार्य करें लेकिन इन श्रमयुक्त कार्यों के बदले या उसके लाभ में महिलाओं को कुछ भी नहीं मिलता। दरअसल महिलाओं का श्रम अधिकारों और दायित्वों के सामाजिक वातावरण में गठित होता है। पति के खेत में महिलाओं के कार्य को उसके सामान्य अधिकारों और कल्याण तथा परिवार के एक सदस्य के रूप में सहारे की तरह समझ लिया जाता है।

स्त्रियों के कार्य के क्षेत्र में **बोसरुप** की पुस्तक **'वीमेन्स रोल इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट'** को व्यापक रूप से मान्यता मिली हुई है।

बॉक्स संख्या 4.3

बोसरुप ने खेती की दो प्रणालियों की चर्चा की है – अफ्रीका में प्रचलित "स्त्रैण प्रणाली" बनाम एशियाई देशों में प्रचलित "पुरुष प्रणाली"। अफ्रीकी खेती स्त्रैण प्रणाली की ओर झुकाव रखती है जिसकी विशिष्टता होती है पारिवारिक श्रम का इस्तेमाल जिसमें स्त्री श्रमबल की भागीदारी की प्रतिशतता अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता और गतिशीलता तक महिलाओं की अधिक पहुँच, दुल्हनों की ऊँची कीमत और लड़कों को कम तरजीह देने जैसी बातें सामने आती हैं।

जबकि एशियाई देशों की पुरुष प्रणाली की विशिष्टताओं में पुरुष के मजदूरीयुक्त श्रम की अधिक भागीदारी होती है जो खेती से महिलाओं को बाहर करने का संकेत करता है। खेती से महिलाओं के अलगाव की यह परम्परा कुछ सामाजिक मानकोंय जैसे – महिलाओं के विरासत अधिकारों में कमी, दहेज, पुत्रों को अधिक तरजीह देना और बढ़ती महिला मृत्यु दर के फलस्वरूप असन्तुलित होते लिंगानुपात के रूप में व्यक्त होती है।

बॉक्स संख्या 4.3 में वर्णित किए गए खेतिहर मॉडल में कृषि के सन्दर्भ में श्रम विभाजन की अवधारणा की स्पष्ट रूप से चर्चा की गई है। आरम्भ करते हुए लेखक ने अफ्रीकी खेती की प्रणाली को 'खेती की स्त्रैण प्रणाली' कहा है जिसमें आधुनिकता और आर्थिक विकास के दौर में महिलाएँ हाशिए पर निर्वासित कर दी गईं। व्हाइटहेड तर्क देते हैं कि कैसे कृषि भी अपनी प्रकृति में जेंडर से युक्त है – नकदी फसल वाले क्षेत्रों का प्रबन्ध पुरुष और उनके पुरुष साथियों द्वारा किया जाता है जबकि खाद्य फसल क्षेत्रों की व्यवस्था महिला श्रम द्वारा की जाती है। अफ्रीका के सन्दर्भ में यह मॉडल निर्वाह कृषि की स्त्रैण प्रकृति और आधुनिक कृषि क्षेत्रों में भागीदारी में महिलाओं की अयोग्यता पर जोर देती है। हालांकि इस ढाँचे की आलोचना इस आधार पर की गई है कि इसमें आधुनिक खाद्य उत्पादन में महिलाओं के योगदान को बिल्कुल उपेक्षित कर दिया है। अफ्रीकी घरों की नकदी की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्त्रियों ने नकदी फसलों या बढ़े हुए व्यापार हेतु पारिवारिक श्रम में महत्वपूर्ण भागीदारी की है।

'कार्य' (Work) को प्रायः शारीरिक और मानसिक श्रम समझा जाता है। होश्चाइल्ड (रेडफर्न एण्ड ऑने, 2010 द्वारा उल्लिखित) ने एक नई शब्दावली 'भावुक श्रम' **(Emotional labour)** का प्रयोग किया जो एक विशिष्ट प्रकार के कार्य की ओर इशारा करती है। यह कार्य देखभाल और पोषण से सम्बन्धित होता है। भावुक श्रम स्त्रैण पेशे से जुड़ा होता है चाहे वह परिवार हो या फिर कार्यक्षेत्र। चूँकि इस श्रम की अच्छी खासी जरूरत है, इसलिए इस विशिष्ट प्रकार के कौशल के लिए भी भविष्य में भुगतान किया जाना चाहिए। परिवार में स्त्रियों के गैर–भुगतानवाले कार्यों को 'प्यार का श्रम' (**Labour of Love**) कहा गया है जो राष्ट्रीय लेखांकन प्रणाली में अलाभकर बना रह जाता है।

बाक्स संख्या 4.4

प्यार का श्रम

- क्या आपके कई बच्चे हैं? डॉक्टर ने पूछा।
- ईश्वर ने मुझसे मुँह मोड़ रखा है। जन्म ले चुके पन्द्रह बच्चों में से केवल नौ जीवित हैं।
- क्या आपकी पत्नी कार्य करती हैं?
- नहीं, वह घर पर रहती हैं।
- ओह, वह अपना दिन कैसे बिताती हैं? डॉक्टर ने पूछा।
- वह सुबह चार बजे जग जाती हैं, पानी भरती हैं, लकड़ी काटती हैं, आग जलाकर नाश्ता तैयार करती हैं। फिर वह कपड़े धोने के लिए नदी जाती हैं। उसके बाद वह अनाज पिसवाने कस्बे जाती हैं और जिस चीज की जरूरत होती है, उसे बाजार से खरीदकर लाती हैं। फिर वह दोपहर का भोजन पकाती हैं।
- क्या आप दोपहर में घर आते हैं?
- नहीं, नहीं, वही खेतों में मेरे लिए खाना ले आती हैं – घर से तीन किलोमीटर दूर है बस।
- फिर उसके बाद?
- हूँ, वह मुर्गियों और सुअरों का ध्यान रखती हैं और वास्तव में वह दिनभर बच्चों की भी देखभाल करती हैं....फिर वह रात का भोजन पकाती हैं और जब मैं घर लौटता हूँ, तो भोजन तैयार रहता है।

- क्या रात का भोजन पकाने के बाद सोने चली जाती हैं?
- नहीं, मैं खाकर सोने चला जाता हूँ। उसके पास घर के और भी कुछ काम होते हैं और रात के नौ बजने पर वह खाली हो पाती हैं।
- फिर भी आप कहते हैं कि पत्नी कुछ काम नहीं करतीं?
- हाँ, डॉक्टर सचमुच वह कुछ नहीं करती। मैंने बताया तो आपको, कि वह घर पर रहती हैं।

(स्रोतः आईएलओ 1977, मिट्टर 2002 द्वारा उद्धृत)

यह उपरोक्त उद्धरण बताता है कि महिलाएँ किन तरह के कामों में लगी रहती हैं, जिन्हें न केवल स्त्रीवाचक काम ही माना जाता है, बल्कि वह काम अदृश्य और बिना किसी भुगतान के रह जाता है।

4.6 सारांश

जैविक लिंग (सेक्स) और सामाजिक जेंडर के बीच अन्तर दिखलाते हुए इस इकाई में जेंडर की अवधारणा की चर्चा की गई। जेंडर को एक सामाजिक निर्मिति के साथ–साथ सांस्कृतिक निर्मिति के रूप में समझने में इकाई ने सहायता की। हमने यह भी देखा कि सामाजिक विभाजन के रूप में जेंडर ने समाजीकरण, कार्य, लैंगिक पृथक्करण और श्रम विभाजन के सन्दर्भ में महिलाओं और पुरुषों को भेदभावपूर्ण ढंग से प्रभावित किया है।

4.7 शब्दावली

सगोत्रता : सगोत्रता ऐसे व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध है, जो जैविक, सांस्कृतिक या ऐतिहासिक वंशानुक्रम से एक ही वंश के होते हैं।

इज्जत के नाम पर हत्या (ऑनर किलिंग) : ऑनर किलिंग, परिवार या सामाजिक समूह के किसी सदस्य की अन्य सदस्यों द्वारा की गई हत्या है। यह हत्या अपराधी (अधिकतर यह बड़ा समुदाय होता है) के इस विश्वास पर की जाती है कि पीड़ित ने परिवार या समुदाय की बदनामी करवाई है। ऑनर किलिंग के ज्यादातर मामले महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ होते हैं।

4.8 सन्दर्भ

Dube, L. (2001) *Anthropological Explorations in Gender: Intersecting Fields*. India: Sage Publication Pvt. Ltd.

Jackson, S. and Scott, S. (2002) Introduction: The gendering of sociology, In In Jackson, S. and Scott, S. (Eds.) Gender: A Sociological Reader, London: Routledge.

Kabeer, N (1990) 'Poverty, Purdha and Women's Survival Strategies in Rural Bangladesh', In Bernstein, H, Crow, B, Mackintosh, M, and Martine, C (Eds.) The *Food Question: Profile Versus People?*, London: Earthscan Publications Ltd.

Kabeer, N. (2000) *The Power to Choose*, London: Verso.

Kabeer, N. (2010) *Gender and Social Protection Strategies in the Informal Economy*, London: Routledge.

Mitter, S. (2002) *'Women Working World Wide'*, In Jackson, S. and Scott, S. (Eds.) Gender: A Sociological Reader, London: Routledge, pp-112-116.

Patel, R. (2010) Working the Night Shift: Women in India's Call Center Industry, New Delhi: Orient Black Swan.

Redfern, C and Kristin Aune (2010). *Reclaiming the F Word: The New Feminist Movement*. Bangalore: Books for Change.

Seth, M. (2001) *Women and Development: The Indian Experience*. New Delhi: Sage Publications.

Stanley, L. and Wise, S. (2002) 'What's wrong with socialisation', In Jackson, S. and Scott, S. (Eds.) Gender: A Sociological Reader, London: Routledge.

West, C. and Zimmerman, D.H. (2002), *'Doing gender'*, In Jackson, S. and Scott, S. (Eds.) Gender: A Sociological Reader, London: Routledge, pp-31-42.

Whitehead, A. (1990) *'Food Crises and Gender Conflict in the African Countryside'*, In Bernstein, H, Crow, B, Mackintosh, M, and Martine, C (Eds.) *The Food Question: Profile Versus People?*, London: Earthscan Publications Ltd.

4.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) क्या जेंडर की निर्मिति सामाजिक तौर पर होती है? अपने तर्कों को उपयुक्त उदाहरणों से पुष्ट करें।

2) समाज और संस्कृति के एक उत्पाद के रूप में जेंडर की व्याख्या करें।

3) श्रम विभाजन और लैंगिक पृथक्करण जैसे पहलू स्त्रीत्व और पुरुषत्व की धारणा की व्याख्या किस प्रकार करते हैं?